

# श्रीवल्लभ-वंशवृक्ष



श्रीविठ्ठलेश-जयन्ती  
२०४१ वि०

सम्पादक ।  
( नि. ली. ) गो. श्रीब्रजभूषणलालजी महाराज  
( श्रीमद्वल्लभाचार्य-तृतीय पीठाधीश्वर )  
कांकरोली  
[ सं. २००४ वि. ]



संशोधित संस्करण-संयोजक :  
श्रीमद्वल्लभाचार्य-तृतीय पीठाधीश्वर-  
गो० श्रीब्रजेशकुमारजी महाराज  
कांकरोली [ राज. ]  
[ सं. २०४१ वि. ]



श्रीमद्वल्लभ-वंशज-गोस्वामि-परिषद्  
की  
आज्ञानुसार प्रकाशित

## हमारा दृष्टिबिन्दु !

इतिहास हमारे विगत जीवन का—भूले हुए अतीत का एक उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। उससे हमारे आज के जीवन को भी एक प्रकाश मिलता है, एक बल और एक प्रेरणा मिलती है। हमारे इतिहास को शतशः विमल विभूतियाँ अपने आदर्श चरित्र और दिव्य प्रेरणाओं से अपने-अपने समय में हमारे राष्ट्रीय वा जातीय जीवन का निर्माण करती रही हैं।

इतिहास किसी राष्ट्र, जाति वा वंश के जीवन का भाष्य है तो वंशावलियाँ उसके लिये सूत्र-रूप। इतिहास की रक्षा और उसके साक्ष्योपाङ्ग अस्तित्व के लिये वंशावलियों वा वंशवृक्षों का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे जीवन का प्रवाह घनादि काल से अविच्छिन्न रूप में चला आ रहा है। जीवन के मूलस्रोत तक पहुँचने की समस्त श्रुत्सलाओं को हम पान नहीं सकते, तथापि अन्तिम किसी एक परम्परा वा केन्द्रबिन्दु को पकड़कर उसे अपने वर्तमान उद्भव का मूल मान लेते हैं और एक वृक्ष की तरह अपने वंश की विभिन्न शाखा-उपशाखादि दलों के बिखरे रूप को उस मूल से परम्परागत अन्विबद्ध कर उसे वंशवृक्ष का रूप दे देते हैं।

हमारा मूल उद्गम दक्षिण भारत का आन्ध्र देश है। सोलहवीं शताब्दी में कांकरवाड़ नाम-वासी पञ्चद्वारविज्ञानगंत तेलङ्ग ब्राह्मण कुल में, जो कृष्णयजुर्वेदीय तैत्तिरीय शाखाध्यायी आचार्य-बाह्यपत्य-भारद्वाज प्रवरान्वित संघपाटिवारु अवतत्कीय कुटुम्ब था, श्रीलक्ष्मणभट्टजी (दीक्षित) नामक एक सर्व विदित महापुरुष हुए हैं। इन्हीं के यहाँ, इनके कुटुम्ब में सौ सोमयज्ञ पूर्ण हो जाने पर स्वयं श्रीमद्भगवद्दत्तानलावतार श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु का श्रीद्वल्लभामागुरु के गर्भ से प्राकट्य होकर चम्पारण्य (रायपुर म.प्र.) के सुरम्य पुनीत स्थल में वंशाक्ष कृष्ण १११५३५ वि. के दिन प्रादुर्भाव हुआ। भूतल पर प्रादुर्भूत होकर आपसी ने किस प्रकार देवी जीवों का उद्धार किया, अपने प्रकाण्ड पाण्डित्य के द्वारा उस समय सर्वत्र प्रस्तारित मायावाद का निरसन कर अपने ब्रह्मवाद, श्रीविष्णु-स्वामिमतानुवर्ति गुदाद्वैत-मुष्टिमागं वा सेवा-प्रणाली आदि का स्थापन कैसे और कहाँ किया तथा अपने अग्रेष माहात्म्य को अपने वंश में प्रस्थापित कर अनन्तर आनुवंशिक आचार्य परम्परा द्वारा किस प्रकार विश्व का कल्याण किया : यह अस्वतन्त्र इतिहास का विषय है, जिसका अनेक विद्वानों ने अरिचरित्रण किया है और किया जायगा। यहाँ तो हम केवल आचार्य-चरणों की वंशावली वा वंशवृक्ष के सम्बन्ध में ही प्रकाश डाल रहे हैं।

श्रीमहाप्रभुजी से हमारी साम्प्रदायिक-आचार्य-परम्परा, हमारी वंश-परम्परा विशिष्ट रूप से चलती है। अतएव हमारा

वंश 'श्रीवल्लभ-कुल' के नाम से विख्यात है। हम गोस्वामी, गुसाईं या गोस्वामिबालक कहलाते हैं। श्रीमहाप्रभुजी ही हमारे मूल पुरुष हैं। श्रीमहाप्रभुजी के यहाँ दो पुत्र-रत्नों का जन्म हुआ, श्रीगोपीनाथजी (१५६६) और श्रीबिदुलनाथजी (१५७२) जो 'श्रीगुसाईं जी' वा 'प्रभुचरण' नाम से सम्प्रदाय में सुविदित हैं। श्रीगोपीनाथजी के श्रीपुरुषोत्तमजी (१५८७) का जन्म हुआ, इसके आगे यह परम्परा यहाँ परिसीमित हो जाती है। श्रीगुसाईंजी के दो पत्नियों—श्रीरुचिमणी और पद्मावती से सात आत्मज और चार कन्याओं का प्रादुर्भाव हुआ, जिनके नाम ये हैं—श्रीगिरिधरजी, श्रीगोविन्दरायजी, श्रीबालकृष्णजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीरघुनाथजी, श्रीयदुनाथजी और श्रीधनश्यामजी। श्रीगुसाईंजी ने गोकुल में स्थायी निवास करके अपने सातों पुत्रों की स्तोपाजित सम्पत्ति के विभाजन—पूर्वक प्रत्येक के भाग्य एक-एक निधि पधरायीं। चार कन्याएँ सहागत जातीय चार कुलों में ब्याही गईं, जिनके पृथक् वंश हैं, जिन पर अन्यत्र प्रकाश डाला जायगा।

इस प्रकार सात पुत्रों ने अपने पृथक्-पृथक् सात संस्थान प्रवर्तित किये, जो 'सात घर' वा 'गादी' के नाम से विख्यात हैं। और सम्प्रदायों की तरह हमारे यहाँ ये सातों घर "पीठ" नहीं कहलाते, अपितु भावना और इतिहास की दृष्टि से श्रीनन्दराय के घर के रूप में 'सात घर' कहलाते हैं। इन्हीं सात घरों के वंशवृक्ष हम आज एक नवीन और सर्वथा मौलिक रूप में यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

हमारी दृष्टि में आज तक के प्रस्तुत अनेक प्राचीन और नवीन लिखित, मुद्रित वा लिखो रूप में वंशवृक्ष, कल्पवृक्ष वा वंशावलियाँ आई और सभी में एक ही पद्धति पायी गयी—वह यह कि, सातों लालजियों के घरों का वंश-विस्तार वहीं तक किया गया है, जहाँ तक कि उन-उन घरों की और-परम्पराएँ चलती हैं। इस दृष्टि से आज सातों पुत्रों में से केवल श्रीगिरिधरजी और श्रीयदुनाथजी के ही दो वंश चल रहे हैं और इन्हीं की परम्पराएँ सर्वत्र व्याप्त हैं, अर्थात् शेष बालकों की वंश-समाप्ति हो गयी है और इन्हीं दो घरों से प्राप्त दत्तकों से उन शेष घरों की आज तक की परम्पराएँ विद्यमान हैं। यह होते हुए भी उन शेष घरों की किसी भी वंशवृक्ष में श्रीगुसाईंजी से लेकर आज तक की समस्त क्रमागत आनुवंशिक परम्पराएँ व पीढ़ियाँ हम नहीं पा सकते। उदाहरणार्थ—तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्णजी के छः पुत्रों के वंशों में से श्रीद्वारकेशजी (१६३०) तथा श्रीपीताम्बरजी (१६३६) के वंश व घर क्रमशः कांकरोली और सूरत में आज भी विद्यमान हैं। किन्तु सभी वंशवृक्षों में श्रीद्वारकेशजी की तिलाकायत-परम्परा श्रीब्रजभूषणजी (१६३५) और

श्रीपीताम्बरजी की श्रीब्रजरायजी (१६६२) तक ही उल्लिखित मिलेगी। आज जब कि तृतीय गृह या इसी प्रकार सातों घर विद्यमान हैं, उनके उत्तराधिकारी व तिलाकायत और उनके कुटुम्ब उपस्थित हैं, तब उनका परम्परागत निदर्शन क्यों नहीं होना चाहिये या ?

हुआ यह है कि सभी वंशवृक्ष-निर्माताओं ने जिस घर की जो परम्परा जहाँ समाप्त हो गई है, वहाँ से आगे जो भी बालक दत्तक (गोद) रूप में, किसी दूसरे घर से आकर उस घर में बैठे हैं, उसको और उसके आगे की आज तक की परम्परा को उस घर में न जोड़ कर वहीं श्रीगिरिधरजी वा श्रीयदुनाथजी अथवा तदन्तर्गत घरों में, जहाँ से वे दत्तक आये हैं, चलने दिया है और इस प्रकार आज के सातों घर और तदन्तर्गत कुटुम्ब इन्हीं दो घरों के वंशवृक्षों में मिल सकते हैं। दत्तक भी जो भिन्न-भिन्न घरों में आये वा गये हैं, वे भिन्न भिन्न कुटुम्बों में वा से आये वा गये हैं। अतएव किसी एक कुटुम्ब की मूल आचार्यों तक सम्पूर्ण परम्परा बताने के लिये हमें अनेक कुटुम्बों का मंथन करना पड़ेगा—जनश्रुतियों का सहारा लेना पड़ेगा। फिर भी हम निश्चित रूप से वे नाम कहाँ से आये वा गये हैं, यह नहीं जान सकते, क्योंकि दिये हुए वंशवृक्षों में, किस परम्परा वा शाखा में कौन-कहाँ से गोद आया वा गया है, यह निश्चित नहीं किया गया है। हाँ, गोस्वामियों के घरों में—वह भी सर्वत्र नहीं—अवश्य इस प्रकार की क्रमागत परम्परा सहित उन उन घरों के वंशवृक्ष, कल्पवृक्ष वा वंशावलियाँ प्राप्त होती हैं; किन्तु उनमें भी गोद आने-जाने के स्थान का उल्लेख नहीं !

वंशवृक्षों की आज तक की पद्धति से किसी भी घर की श्रीगुसाईंजी से लेकर विद्यमान समय तक की पीढ़ियाँ गिनने में बड़ी असुविधा और भ्रम पड़ जाता है, क्योंकि किसी भी घर का सम्पूर्ण वंशवृक्ष हमारे सामने उपलब्ध नहीं है। इस स्थिति में आशोक, अधिकार आदि सज्जों पर बड़ा मतिभ्रम हो सकता है ! यह तो एक निश्चित व्यवहार और वैधानिक नीति की बात है कि जब कोई भी बालक अपने घर से दूसरे घर में जाकर गोद बैठ जाता है, भले ही एक कुटुम्ब में हो या कुटुम्बान्तर में, उसका अपने मूलवर्ण, घर वा पित्रकुल से कोई भी संबंध वा बन्धन-वैधानिक, शास्त्रीय, व्यावहारिक-नहीं रहता ! उसे न अपने मूल घर से उत्तराधिकार प्राप्त है; न सापिण्ड्य आशोक और न किसी प्रकार का जातीय व सामाजिक व्यवहार ही। इसी प्रकार निकटतम उत्तराधिकारी ही गोद लिया जाय, यह अनिवार्य नहीं होता—गोद किसे और किसे से लेना, यह गोद लेने वाले की स्वतन्त्रता पर है। हाँ, किसी समाप्त-वंश के घर पर उत्तराधिकार अवश्य ही उसी

कुटुम्ब के निकटतम व्यक्ति का होता है। हमारे यहाँ तो यद्यपि अपने ही कुल-वल्लभ वंशज-गोस्वामियों में से ही दत्तक लिये वा दिये जाते हैं, अतः गोत्रोच्छेद की स्थिति नहीं आती, तथापि दत्तक का स्वरूप तो रहता ही है, भले ही फिर दत्तक-विधान हो या न हो ! गोद की स्थिति में उनकी पीढ़ियों के अनुसार उत्तराधिकार, आशोक और जातीय व्यवहार भी प्रायः पृथक् हो जाते हैं। प्रचलित वंशवृक्षों में जहाँ समानान्तर पीढ़ियों का पता नहीं लगता वहाँ समकालीन पुरुषों का भी परिज्ञान नहीं हो पाता, जो इतिहास समझने के लिए अग्रच्छा सूत्र है। यह कठिनाता तब और हो जाती है जब समान नामधारी एक ही वंश में कई पुरुषों का उल्लेख मिलता है।

इस दृष्टि से प्रत्येक घर वा तदन्तर्गत कुटुम्बों की मूल आचार्यों से लेकर आज तक की आनुवंशिक परम्परा दिखलाते हुए पृथक्-पृथक् स्वतन्त्र वंशवृक्ष निर्माण करने की आवश्यकता अनिवार्यतः अनुभव की गयी और हमने अनेक वंशवृक्ष-वंशावलियों का संकलन, अनुशीलन और गवेषण कर वत्त मान में जितने भी गोस्वामियों के घर विद्यमान हैं, उनके पृथक्-पृथक् वंशवृक्ष तैयार किये। इनमें जिन-जिन बातों का विशेष ध्यान रखा गया है, वे इस प्रकार हैं—

- किसी भी घर की शाखा वहीं से पृथक् की गयी है, जहाँ से उसके मूल-पुरुष पृथक् होते हैं। इस पद्धति से यह भी सुविधा रही है कि एक वंश एक ही पत्र पर व्यवस्थित रूप में आ गया है। उदाहरणार्थ—तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्णजी के घर के जो आज कांकरोली और सूरत के दो घर विद्यमान हैं, उन्हें पृथक् पृथक् दो वृक्षों में मूल श्रीद्वारकेशजी और श्रीपीताम्बरजी से ही अलग करके दिखा दिया गया है।
- जिन भाइयों के वंश परिसमाप्त होगये हैं, उन्हें क्रमशः सुविधानुसार किसी भी भाई के विद्यमान वंशों के साथ जोड़ दिया गया है।
- जब एक घर के कई भाग करने पड़े हैं तो उनका निदर्शन उस घर की संख्या के साथ अक्ष ( बटे ) देकर उसके अन्तर्गत आने वाले उपगृहों के नामोल्लेख सहित कर दिया गया है।
- वंशवृक्षों में जिन घरों, शाखाओं वा दत्तक गये व्यक्तियों का निदर्शन उस मूल-पुरुष से सम्बन्ध रखते हुए अपेक्षित नहीं है, उसे देखो (—अग्रमुक्त गृह), अथवा गोद गये (—अग्रमुक्त गृह में) लिख कर वहाँ छोड़ दिया गया है। उदाहरणार्थ—तृतीय। १ गृह में केवल श्रीद्वारकेशजी (कांकरोली) का वंशवृक्ष मिलेगा—दूसरे छहों पुत्रों



वा श्रीद्वारकेशजी के भाइयों अथवा श्रीपुरुषोत्तमजी (१७३८) सरीखे गोद गये आदि नामों की वंश-परम्परा निम्नलिखित संस्था वाले वंशवृक्ष में ही मिलेगी।

(v) गोद गये वा भाये हुए व्यक्तियों की निम्नलिखित संस्था वाले वंशवृक्ष में सरलता और निश्चित रूप में पाया वा पहिचाना जा सके, इसके लिये वे व्यक्ति, जिनके यहाँ गोद गये वा जिनके यहाँ से गोद भाये हैं, उनके पितृ-नामों का जन्म संवत् सहित उल्लेख एक संकेत-चिह्न देकर विशेष टिप्पणी में प्रत्येक पत्र के एक पार्श्व में कर दिया गया है। जहाँ किसी वंशवृक्ष के व्यक्ति उसी वंशवृक्ष में गोद भाये वा गये हैं, उनके निदर्शन के साथ केवल 'गोद भाये-गये' का उल्लेख कर टिप्पणी में उसी प्रकार जन्म संवत् सहित पितृनाम दे दिया गया है।

(vi) जिन व्यक्तियों के कोई विशेष उपनाम, निवासस्थान, ऐतिहासिक वा सांप्रदायिक महत्व प्राप्त हैं, उनके साथ उनका उल्लेख भी कर दिया गया है। इस दृष्टि से उनके कार्य-कलाप, निवास, क्रमशः संस्थान-प्रतिष्ठापन आदि का भी संकेत मिल जाता है।

(vii) वंशवृक्ष की पृथक्-पृथक् मूल पुरुष व भाइयों की परम्परा वा पीढ़ियों को इस ढंग से रखा गया है कि मूल पुरुष से समान पीढ़ी में आने वाली वंश की सभी सन्तति एक ही श्रेणी में वा पंक्ति में समानान्तर रूप में दिखती रहे, जिससे कि पीढ़ी गिनने में सुविधा के साथ-साथ यह निदर्शित होता रहे कि एक भाई की शाखा की अमुक सन्तति दूसरे भाई की शाखा की सन्तति की किस कोटि में आती है—भ्रातृ, पितृ वा पितृव्य-कोटि और किस पीढ़ी और श्रेणी में ! उदाहरणार्थ—तृ०१ गृह में श्रीद्वारकेशजी (१६३०) श्रीब्रजभूषणजी (१६३६), श्रीब्रजालङ्कारजी (१६४१) आदि भाइयों से चतुर्थ पीढ़ी में आने वाले श्रीगिरिधरजी (१७४५), श्रीब्रजभूषणजी (१७५५), श्रीपुरुषोत्तमजी (१७३८) आदि सभी क्रमशः एक ही पंक्ति, समान पीढ़ी में दिख रहे हैं।

(viii) एक शाखा में उठ कर दूसरी शाखा में गोद जाकर जुड़ जाने की स्थिति में कभी-कभी अमुक व्यक्ति अपनी मूल पीढ़ी से ऊपर वा नीचे होगये हैं। किन्तु जब अमुक व्यक्ति गोद जाता है तो निश्चित रूप से उसे उस व्यक्ति के नीचे सन्तति-स्थान में आना पड़ेगा—फिर भले ही गोद जाने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति के पितृ-पितृव्य, भ्रातृ अथवा पुत्र-पौत्रादि कोटि में हो। उदाहरणार्थ—तृ०१ गृह में श्रीपुरुषोत्तमजी (१८४७) जब भ्रातृ-

कोटि के श्रीब्रजभूषणजी (१८३५) के यहाँ गोद जाते हैं, तो निश्चित रूप से उन्हें सन्तति-स्थान में लाकर—एक पीढ़ी उतार कर वंशवृक्ष में दिखाया गया है। इसी तरह श्रीविठ्ठलनाथजी (१६७०) जब अपने प्रपितामह कोटि के श्रीगोपालजी (१६१०) के यहाँ गोद जाते हैं, तो वे सहसा अपने श्रीब्रजभूषणजी (१६६८) की भ्रातृ कोटि से दो पीढ़ी ऊपर उठ कर अपनी पितामह की कोटि में आ जाते हैं। इस प्रकार का व्यतिक्रम गोद की स्थिति में अनिवार्य है।

(ix) प्रत्येक व्यक्तिके साथ उनके जन्म-संवत् यथोपलब्ध रूप में दे दिये गये हैं—कुछ के सम्बन्ध में द्विविध्य प्राप्त होने पर भी जो ऐतिहासिक संगति से हमने उचित समझे हैं, उन्हें ही निश्चित रूप से दे दिये हैं। कुछ विद्यमान बालकों के संवत् पृष्ठने पर भी अज्ञात होने से रह गये हैं। संवत् से उनकी ऐतिहासिक स्थिति समसामयिकता वा पूर्वापरता और संगति लगाने एवं ऐतिहासिक-निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी एवं वंशवृक्षों में सरलता पूर्वक प्राप्त करने वा पहिचानने में सुविधा रहेगी।

(x) जिन व्यक्तियों की वंश-परम्परा समाप्त हो गयी है वा अज्ञात है, उनके नामों के नीचे ० और विद्यमान व्यक्तियों के नीचे ॥ चिह्न देकर उनके निवास-स्थान का उल्लेख कर दिया है।

(xi) साधारणतया श्रीगुसाईजी से लेकर अद्यावधि विद्यमान गोस्वामियों तक कोई १८ पीढ़ी के आस-पास व्यतीत हुई हैं। किन्तु अनेक वंशवृक्षों में बहुत थोड़ी पीढ़ी प्राप्त होगी। उदाहरणार्थ—चतुर्थ एवं सप्तम गृह में आज तक कुल ८-१० ही पीढ़ी प्राप्त हैं। उसका कारण यह है कि इन घरों में तथा ऐसे अन्य कुछ घरों में भी जो गोद परम्परा चली है, वह बीच में बहुत लम्बा व्यवधान ले-लेकर। अर्थात् जब किसी घर की कोई परम्परा निस्सन्तति समाप्त हो जाती है, तो बहुत समय तक उस घर पर अधिकार उस निस्सन्तान-गोस्वामी की बहूजी का अथवा निकट कुटुम्बी जनों का निजी रूप से रहा है और अपनी अन्तिमावस्था में—अथवा यदि उन बहूजी (सास) की भी कोई बहूजी (बहू) हुई तो उनकी अन्तिमावस्था में—अन्य बालक गोद लिये गये हैं, जिससे कि उस बीच में कोई दो-चार पीढ़ी का अन्तर पड़ गया है। अतएव इतनी थोड़ी पीढ़ी देखकर किसी को परम्पराओं की साङ्गोपाङ्गता पर भ्रम हो सकता है, परन्तु वस्तुतः वे परम्पराएँ कम होते हुए भी पूर्ण और प्रामाणिक हैं।

(xii) इन वंशवृक्षों में यद्यपि क्रमशः ज्येष्ठ संतति की परम्परा देखते हुए सभी घरों की तिलकायत-परम्परा का निदर्शन हो जाता है; तथापि कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अमुक कारणावश ज्येष्ठ पुत्र तिलकायत न होकर उनके कनिष्ठ हुए हैं अथवा ज्येष्ठ पुत्र की वंश-समाप्ति अथवा अल्प-वय में निधन के अनन्तर उनके भ्राता उस घर के तिलकायत हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में केवल ज्येष्ठ पुत्रों की परम्परा गिनने से ही उस घर के समस्त टीकैतों की गणना नहीं होगी। इस सम्बन्ध में तत्तद्गृहों से पृथक् जानकारी लेनी होगी। हमने सभी घरों की तिलकायत-परम्परा मंगायी थी, किन्तु खेद है कि अधिकांश महानुभावों ने हमें यह जानकारी नहीं भेजी। अतः हम टीकैत परम्परा का पृथक् निदर्शन नहीं कर सके हैं।

(xiii) किसी-किसी घर में ऐसा हुआ है कि एक ही व्यक्ति के दूसरे किसी घर भी गोद जाकर उनका अधिकार दोनों वा कभी-कभी दो से भी अधिक घरों पर रहा है और अनन्तर उनकी संततियों में उन घरों का विभाजन हुआ है। उदाहरणार्थ—प्र०१५ गृह में श्रीजीवनलालजी, पोरबन्दर (१६१६) के पुत्र श्रीरणछोड़लालजी (१६३८) द्वि०१२ गृह (लालबाबा) में श्रीधनश्यामजी (१६२८) के यहाँ भी गोद जाकर दोनों घरों के अधिपति रहे हैं और अनन्तर उनकी दो सन्ततियों में विद्यमान पोरबन्दर और लालबाबा के घरों का पृथक्-पृथक् गृह में श्रीवल्लभलालजी (१६४८) (गोकुल-कामव) के समय से आज तक रही। ऐसी स्थिति में हमने दोनों घरों में उन व्यक्तियों को दिखावा है—विभाजन के साथ परम्पराओं को पृथक् किया है।

(xiv) जिन घरों की वंश-परम्परा समाप्त हो गयी है और वे उत्तराधिकार की दृष्टि से जिस व्यक्ति के अधिकार में भाये हैं, उन सभी घरों में पृथक्-पृथक् उस व्यक्ति को हमने नहीं दिखाया है; क्योंकि वे उन सभी घरों में गोद नहीं गये हैं—उत्तराधिकार प्राप्त है। उदाहरणार्थ—तृ०१ गृह में यद्यपि श्रीरणछोड़जी, बुरहानपुर (१७१५) का एक स्वतन्त्र घर है, जिनकी परम्परा में श्रीगोकुलनाथजी (लल्लूजी. सूरत) (१८००) का घर भी आता है। किन्तु क्योंकि यह घर वंश-समाप्ति के अनन्तर कांकरोली के तिलकायत के ही अधिकार में आता है, अतः तत्कालीन कांकरोली के तिलकायत की परम्परा उसमें भी पृथक् नहीं दिखायी है।

(xv) कभी-कभी ऐसा होता है कि एक व्यक्ति अपनी बहूजी और एक पुत्र को छोड़कर तहो जाते हैं और अनन्तर

उस पुत्र के भी सन्तति न होने और तहो जाने के कारण उनकी बहूजी रह जाती है, इस प्रकार उस घर में सास-बहू, दो उत्तराधिकारी रहते हैं। अब किसी विमनस्कता के कारण दोनों पृथक्-पृथक् दो व्यक्ति गोद लेते हैं। किन्तु वैधानिक और जातीय-पद्धति के अनुसार गोद लेकर किसी घर का किसी को उत्तरा-कारी वा टीकैत बनाने का अधिकार सास को ही होने से उन बहूजी (सास) के लिये हुए व्यक्ति ही उस घर के टीकैत होते हैं और बहूजी (बहू) के द्वारा लिये हुए व्यक्ति अनन्तर आने वाले—यद्यपि ज्येष्ठ पुत्र की परम्परा में—उन्हीं (बहू) के द्वारा लिये हुए व्यक्ति की सन्तति आती है। उदाहरणार्थ—प्र०१७ गृह कोटा में श्रीमयूरेशजी के घर के टीकैत रूप में श्रीरणछोड़लालजी (१६०८) के बहूजी द्वारा लिये हुए श्रीद्वारकेशजी (१६४४) यद्यपि टीकैत है, तथापि आनुवंशिक ज्येष्ठ सन्तति की परम्परा के रूप में श्रीजीवनलालजी (१६३७) के बहूजी द्वारा गोद लिये हुए श्रीदीक्षितजी (१६७१) ही प्रथम दिखाय गये हैं।

(xvi) हमारे यहाँ कभी कभी ऐसी भी स्थिति आती है कि किन्हीं गोस्वामी वा बहूजी के द्वारा अमुक बालक गोद ले लिये जाते हैं। अनन्तर अमुक कारणों से दूसरे बालक को गोद ले लिया जाता है। उदाहरणार्थ—वर्तमान में श्रीगोपेश्वरलालजी (१६४६) के बहूजी ने द्वितीय/१ गृह (श्रीविठ्ठलनाथजी) में श्रीगिरिधरलालजी (इन्दौर) को एक बार गोद ले लिये हैं, अब किसी कारण से पुनः प्र०६ गृह से श्रीकृष्णजीवनजी (बम्बई) के पुत्र श्रीश्यामसुन्दरजी को गोद ले लिया है। ऐसी विवादास्पद स्थिति में सम्प्रति हमने पूर्व दत्तक श्रीगिरिधरलालजी को ही इस घर की तिलकायत परम्परा में दिखाया है—द्वितीय दत्तक को नहीं। हम अपनी ओर से—कौन तिलकायत हैं, कौन नहीं—इसका कोई निर्णय नहीं देना चाहते। जो वस्तु हमारे सामने अभी तक थी, हमने उसे अविकल दे दिया है। दत्तक लेने देने वाले दोनों पक्षों में आगे जो भी वैधानिक रीति से समाधान हो जायगा और अन्तिम निर्णय वस्तु दोनों पक्षों की सहमति से हमें विद्धित होगी, हम तदनुसार उल्लेख कर देंगे। यों हम अपने दृष्टिबन्धु से इस विषय में दोनों पक्षों से तटस्थ हैं—हमें किसी भी पक्ष से न कोई आपत्ति है, न किसी के प्रति समर्थन। (अब तो यह यथास्थिति निर्णयित है)

(xvii) सम्प्रदाय में, जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है, श्रीगुसाईजी के सात पुत्रों के सात घर विद्यमान हैं। इनमें भी आद्यावधि प्रष्ट गृह के सम्बन्ध में विवाद है



इन वंशवृक्षों का उद्देश्य प्रत्येक घर की आज तक की आनुवंशिक परम्परा दिखाना है—किस घर का तिलकाय-तत्व, उत्तराधिकार प्रथम अथवा अमुक गृहत्वेन आचार्यत्व की मान्यता किसे मिलना चाहिये, इस तथ्य वा विवाद का निर्णय करना नहीं। अतएव कोई भी षष्ठ गृह मान्य किये जाय; हमारा इस बात से प्रस्तुत वंशवृक्ष के कार्य में कोई सम्बन्ध नहीं रहा है।

इस प्रकार प्रस्तुत पद्धति और सर्वथा मौलिक दृष्टिबिन्दु से इन वंशवृक्षों को तैयार किया गया है। अब सर्वसाधारण की जानकारी के लिये हम यहाँ सभी घरों का वर्तमान संक्षिप्त परिचय और दे रहे हैं—

#### प्रथम गृह—

यह श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभु के द्वितीय तनुज गुसाई श्रीविठ्ठलनाथजी के प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी (१५६७) की परम्परा है। श्रीगिरिधरजी के तीन पुत्रों में से प्रथम पुत्र श्रीमुरलीधरजी (१६३०) के अल्प वय में गत हो जाने पर प्रथम तिलकायत द्वितीय पुत्र श्रीदामोदरजी (१६३२) हुए। बड़े होने के कारण आपके माथे श्रीनाथजी एवं श्रीनवनीतप्रियाजी विराजे और प्रथम गृह के तिलकायत रूप में श्रीमथुरेशजी उनके अनुज श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) (१६३४) के यहाँ पधराये गये। प्रथम गृह के अन्तर्गत निम्नलिखित वंशवृक्ष प्रस्तुत किये गये हैं—

(i) प्रथम/१ गृह: नाथद्वारा (तिलकायत)—

श्रीदामोदरजी के द्वितीय पुत्र श्रीविठ्ठलरायजी (१६५७) के प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी (१६८६) से प्रारम्भ होकर यह घर सम्प्रदाय का प्रमुख पीठ-स्थान तिलकायत वा टीकैत (श्रीनाथजी) का घर कहलाता है, जिसमें श्रीनाथजी एवं श्रीनवनीतप्रियाजी विराजते हैं। इसके वर्तमान अधिपति गो० ति० श्रीगोविन्दलालजी म० हैं। इसी घर के अन्तर्गत श्रीविठ्ठलरायजी के द्वितीय पुत्र श्रीकाकावल्लभजी (१७०३) के वंश में श्रीगोकुलाधीशजी, श्रीलालजी, अमरली, पोरबन्दर (गोपीनाथजी हवेली), बड़ामन्दिर (बम्बई) आदि घर आते हैं।

(ii) प्रथम/२ गृह: बम्बई (गोकुलाधीशजी)—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के सात पुत्रों में से प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजी (१७२८) का वंश है। श्रीगिरिधरजी की छोटी पीढ़ी में आगत द्वितीय श्रीमथुरानाथजी (कोटा) (१८२८) के प्रथम पुत्र श्रीद्वारकेशजी (धन्वजी, जतीपुरा) (१८५२) से यह घर पृथक् चलता है। इसके अधिपति श्रीमुरलीधरजी, बेट (१९१३) के पुत्र गो० श्रीगोपिकावल्लभजी (मगनजी) म० थे, और अब गो० श्रीरसिकवल्लभजी हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

(iii) प्रथम/३ गृह: बम्बई (श्रीलालजी)—यह घर उक्त श्रीमथुरानाथजी के चतुर्थ पुत्र श्रीब्रजलालजी (मगनजी) (१८६७) से पृथक् होता है। इसके वर्तमान अधिपति श्रीवागधीशजी [१९४१] के पुत्र गो० श्रीविठ्ठलेशजी म० हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

(iv) प्रथम/४ गृह: बम्बई-बेट [अमरली]—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के द्वितीय पुत्र श्रीमुरलीधरजी [१७३१] का वंश है। इसके अधिपति गो० श्रीपुरुषोत्तमलालजी म० थे अब गो० श्रीजीवनजी म० हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

[v] प्रथम/५ गृह: पोरबन्दर [गोपीनाथजी हवेली]—कटरा वाला मन्दिर [गोकुल]—यह श्रीकाकावल्लभजी के तृतीय पुत्र श्रीगोपालजी [१७३३] का वंश है। श्रीगोपालजी के तृतीय पुत्र श्रीलक्ष्मणजी [१७८७] के प्रथम पुत्र श्रीद्वारकानाथजी [१८१३] से पृथक् चलता है। इसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीगोविन्दरायजी [विठ्ठलनाथजी म०] हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

उक्त श्रीलक्ष्मणजी के द्वितीय पुत्र श्रीगोवर्धनजी [१८१७] से पृथक् होकर कटरावाला मन्दिर [गोकुल] का घर चलता है, जिसके अधिपति गो० श्रीगोपिकावल्लभजी म० [बम्बई] के पुत्र गो० श्रीमुरलीधरजी म० थे, और जिनके माथे विराजते हैं।

(vi) प्रथम/६ गृह: बम्बई (बड़ा मन्दिर)—यह घर श्रीकाकावल्लभजी के सप्तम पुत्र श्रीगोकुलनाथजी (१७५०) का वंश है। इसके अधिपति गो० श्रीकृष्णजीवनजी (गिरिधरजी) म० थे, जिनके माथे श्रीवालकृष्णलाल विराजते हैं।

(vii) प्रथम/७ गृह: कोटा (श्रीमथुरेशजी), कृष्णगढ़—यहाँ से श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) का वंश चलता है। श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के चार पुत्रों में से प्रथम पुत्र श्रीवल्लभजी (प्रभुजी) (१६६०) का प्रथम गृह के तिलकायत (श्रीमथुरेशजी) का यह घर है। श्रीवल्लभजी (प्रभुजी) से नवी पीढ़ी में प्रथम श्रीरणछोड़लालजी (१९०८) से इस घर की दो शाखाएँ हो जाती हैं। जिनमें प्रथम श्रीरणछोड़लालजी के पुत्र श्रीजीवनलालजी (१९३७) का कृष्णगढ़ का घर है। इसके दत्तक रूप में अधिपति श्रीगोकुलनाथजी (१९४५) के पुत्र गो० श्रीदीक्षितजी म० थे, और अब गो० श्रीश्याममनोहरजी हैं। जिनके माथे विराजते हैं।

दूसरी शाखा श्रीरणछोड़लालजी के दत्तक पुत्र रूप में श्रीद्वारकेशजी (गिरिधरजी) (१९४४) का श्रीमथुरेशजी

(कोटा) का घर है। इसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीरणछोड़लालजी म० हैं, जिनके माथे श्रीमथुरेशजी विराजते हैं। इसी घर के अन्तर्गत अहमदाबाद, चापासेनी, माण्डवी, जामनगर, जूनागढ़, पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली), कोटा (बड़े महाप्रभुजी) आदि घर आते हैं।

(viii) प्रथम/८ गृह: अहमदाबाद—यह घर श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के द्वितीय पुत्र श्रीमथुरामल्लजी (१६६२) का वंश है। इसके अधिपति गो० श्रीरणछोड़लालजी म० थे और अब गो० श्रीब्रजरायजी म० हैं जिनके माथे श्रीनटवरलाल श्यामलाल विराजते हैं।

(ix) प्रथम/९ गृह: चापासेनी, माण्डवी—यह घर श्रीगोपीनाथजी (दीक्षितजी) के तृतीय पुत्र श्रीगोविन्दजी (१६७३) का वंश है। श्रीगोविन्दजी के प्रथम पुत्र श्रीमुरलीधरजी (१६९६) से यह घर पृथक् चलता है। श्रीमुरलीधरजी के द्वितीय पुत्र श्रीदामोदरजी (१७२१) की शाखा में चापासेनी का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीब्रजभूषणजी म० हैं और जिनके माथे विराजते हैं। श्रीदामोदरजी के इस घर की, उनकी छोटी पीढ़ी में, तृतीय श्रीकृष्णजीवनजी (कुंजालालजी) (१८८१) से पुनः दो शाखाएँ पृथक् हो जाती हैं—प्रथम शाखा में श्रीकृष्णजीवनजी के द्वितीय पुत्र श्रीमुरलीधरजी (१९०७) की परम्परा में उक्त चापासेनी का घर और द्वितीय शाखा में उनके पंचम पुत्र श्रीविठ्ठलेशजी (१९१६) के पुत्र जामलभालिया वा विलेपारला (बम्बई) के गो० श्रीब्रजनाथलालजी म० आते हैं, और अब गो० श्रीत्रिभंगीलालजी हैं। जिनके माथे विराजते हैं। उक्त श्रीमुरलीधरजी (१६९६) के चतुर्थ पुत्र श्रीद्वारकानाथजी (१७३४) से माण्डवी का घर पृथक् होकर चलता है जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीदामोदरलालजी म० हैं, और जिनके माथे विराजते हैं।

(x) प्रथम/१० गृह: जामनगर, जूनागढ़, पोरबन्दर (द्वारकानाथजी हवेली)—यह घर उक्त श्रीगोविन्दजी के तृतीय पुत्र श्रीबाबूरायजी (गोपालजी) (नगर) (१७११) का वंश है। श्रीबाबूरायजी से इस घर की पृथक् शाखाएँ हो जाती हैं। श्रीबाबूरायजी के प्रथम पुत्र श्रीगोवर्धनेशजी (१७२६), उनके प्रथम पुत्र श्रीवल्लभजी (१७५६) और उनके द्वितीय पुत्र श्रीगिरिधरजी (नरयुजी) (१७६४) की परम्परा में जामनगर का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र गो० श्रीब्रजभूषणजी म० हैं और जिनके माथे विराजते हैं।

उक्त श्रीवल्लभजी के तृतीय पुत्र श्रीमाधवरायजी [१७६६] की परम्परा में जूनागढ़ का घर आता है। इसके अधिपति श्रीरघुनाथजी [१९५२] के पुत्र गो० श्रीपुरुषोत्तमलालजी म० थे और इनके माथे विराजते हैं।

उक्त श्रीबाबूरायजी के द्वितीय पुत्र श्रीहनुजी [श्रीगोकुलाधीशजी] [१७४५] की परम्परा में पोरबन्दर [द्वारकानाथजी हवेली] का घर है, जिसके अधिपति श्रीरमणलालजी [१९०४] के पुत्र गो० श्रीधनश्यामलालजी म० थे और अब गो० श्रीमधुरेशकुमारजी म० हैं, जिनके माथे विराजते हैं।

[xi] प्रथम/११ गृह: कोटा [बड़े महाप्रभुजी]—यह घर श्रीगोपीनाथजी [दीक्षितजी] के चतुर्थ पुत्र श्रीरामकृष्णजी [१६७५] का वंश है, जिसके अधिपति श्रीदामोदरजी [१९४६] के पुत्र गो० श्रीपुरुषोत्तमलालजी म० थे और जिनके माथे विराजते हैं।

#### द्वितीय गृह

यह गुसाईजी के द्वितीय पुत्र श्रीगोविन्दरायजी [१५६८] का वंश है। श्रीगोविन्दरायजी के पंचम प्रपौत्र श्रीगिरिधरजी [१७४५] से इसकी पृथक् शाखाएँ हो जाती हैं।

[i] द्वितीय/१ गृह: नाथद्वारा, इन्दौर—

श्रीगिरिधरजी के प्रथम पुत्र श्रीरघुनाथजी (१७६२) से पञ्चम पीढ़ी में प्रथम श्रीकृष्णरायजी [१८५७] के तृतीय पुत्र श्रीविठ्ठलरायजी (१८७६) की शाखा में इन्दौर का घर आता है, जिसके अधिपति गो० श्रीकृष्णरायजी म० थे और अब गो० श्रीविठ्ठलनाथजी म० हैं, जिनके माथे श्रीगोवर्धननाथजी विराजमान हैं।

उक्त श्रीकृष्णरायजी (१८५७) के चतुर्थ पुत्र श्रीकाका गिरिधरजी (१८८७) की परम्परा में इस वंश के तिलकायत (नाथद्वारा) का घर आता है, जिसके अधिपति गो० श्रीकृष्णरायजी म० के पुत्र गो० श्रीगिरिधरलालजी म० थे और अब गो० श्रीकल्याणरायजी हैं और जिनके माथे श्रीविठ्ठलनाथजी विराजते हैं।

(ii) द्वितीय/२ गृह: बम्बई (लालबाबा), नडियाद—यह घर श्रीगिरिधरजी के चतुर्थ पुत्र श्रीधनश्यामजी (१७७४) का वंश है। श्रीधनश्यामजी के तृतीय पुत्र श्रीयदुनाथजी (१८१६) की पृथक् शाखा में बम्बई (लालबाबा) का घर आता है, जिसके अधिपति गो० श्रीवल्लभलालजी म० थे और जिनके माथे विराजते हैं।



उक्त श्रीधनश्यामजी के पञ्चम पुत्र श्रीगोपालजी (१८२७) की परम्परा में नजियाद का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीरघुनाथजी (१९५२) के पुत्र गो० श्रीब्रजभूषणजी म. हैं और जिनके माथे.....विराजते हैं।

### तृतीय गृह

यह श्रीगुसांईजी के तृतीय पुत्र श्रीबालकृष्णजी (१९७६) का वंश है। श्रीबालकृष्णजी से ही इसकी पृथक्-पृथक् शाखाएं हो जाती हैं।

(1) तृतीय 1१ गृह : कांकरोली (द्वारकाधीश) (मथुराधीश) यह घर श्रीबालकृष्णजी के प्रथम पुत्र श्रीद्वारकेशजी (१९३०) की परम्परा में है। श्रीद्वारकेशजी के प्रथम प्रपौत्र श्रीगिरिधरजी (१७४५) से पुनः इसकी शाखाएं होती हैं। श्रीगिरिधरजी के प्रथम पुत्र श्रीब्रजभूषणजी (१७६५) की परम्परा में इस वंश के तिलकायत (कांकरोली) का घर आता है, जिसके अधिपति लेखक स्वयं (श्रीब्रजभूषणजी) (प्रस्तुत वंशवृक्षों के सम्पादक) थे, और अब गो. श्रीब्रजेशकुमारजी म. हैं जिनके माथे श्रीद्वारकाधीश विराजते हैं।

उक्त श्रीगिरिधरजी के तृतीय पुत्र श्रीवल्लजी (१७८१) की परम्परा में श्रीमथुराधीश (छोटा मन्दिर) का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीबालकृष्णलालजी (१९२४) के पुत्र गो० श्रीविठ्ठलनाथजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमथुराधीश विराजते हैं।

( ) तृतीय 1२ गृह : सूरत—यह घर श्रीबालकृष्णजी के चतुर्थ पुत्र श्रीपीताम्बरजी (१९३९) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीब्रजलालजी म. हैं और जिनके माथे श्रीबालकृष्णजी विराजते हैं।

●●● प्रथम संस्करण (२००४ वि.) के बाद से प्रस्तुत द्वितीय संस्करण (२०४१ वि.) के मध्य जो भी परिवर्तन हुआ है (संशोधित संस्करण-संयोजक)

### संशोधित संस्करण २०४१ वि.

#### दो शब्द —

आपको विदित हो है कि कोई चालीस वर्ष पूर्व समय गोस्वामी-कुटुम्बों के वंशवृक्षों का संकलन.....

“श्रीवल्लभ-वंशवृक्ष” नाम से श्रीमदवल्लभवंज. गोस्वामिपरिषद् द्वारा प्रकाशित हुआ था- प्रकाशन के बाद से आज तक की इस सुदीर्घ अवधि में उसमें बहुतकुछ न्यूनाधिक हुआ है.....कोई दो-चार पीढ़ियों तक का वंश-विस्तार, विभिन्न कुटुम्बों की संस्थिति, उनका समायोजन।

### चतुर्थ गृह—

यह गोकुल का घर श्रीगुसांईजी के चतुर्थ पुत्र श्रीगोकुलनाथजी (१९०८) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीदेवकीनन्दनजी म. हैं और जिनके माथे श्रीगोकुलनाथजी विराजते हैं।

### पञ्चम गृह

यह कामवन का घर श्रीगुसांईजी के पञ्चम पुत्र श्रीरघुनाथजी (१९११) का वंश है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीगोविन्दलालजी म. हैं और जिनके माथे श्रीगोकुलचन्द्रमाजी विराजते हैं।

### षष्ठ गृह—

यह घर श्रीगुसांईजी के षष्ठ पुत्र श्रीयदुनाथजी (१९१५) का वंश है। श्रीयदुनाथजी से ही इसकी शाखाएं हो जाती हैं।

(i) षष्ठ 1१ गृह : शेरगढ़ (बड़ोदा)—यह घर श्रीयदुनाथजी के प्रथम पुत्र श्रीमधुसूदनजी (१८३६) का वंश है। इस घर में सम्प्रति कोई बालक तिलकायत नहीं है—यह श्रीगिरिधरलालजी (१९२३) के बहूजी के ही आधिपत्य में सम्प्रति है जिनके माथे श्रीकल्याणरायजी विराजते हैं।

(ii) षष्ठ 1२ गृह : मथुरा (श्रीमदनमोहनजी-दाऊजी) (श्री छोटे मदनमोहनजी)—यह घर श्रीयदुनाथजी के द्वितीय पुत्र श्रीरामचन्द्रजी (१८३८) का वंश है। श्रीरामचन्द्रजी से छठी पीढ़ी में द्वितीय श्रीब्रजपालजी (१८३९) से इसकी शाखाएं हो जाती हैं। श्रीब्रजपालजी के द्वितीय पुत्र श्रीविठ्ठलनाथजी (१८७५) की परम्परा में मथुरा का श्रीमदनमोहनजी-दाऊजी का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति श्रीबालकृष्णलालजी (१९२४) के पुत्र श्रीविठ्ठलनाथजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

अतः पूर्व परम्पराओं की अविच्छिन्न धाराओं के साथ संकलित अद्यतन वंश-विस्तार के परिपूर्ण परिज्ञान के लिये उसमें उपरिष्ठत परिवर्तन, परिवर्द्धन का समावेश होना नितान्त वांछनीय है-अपने ऐतिहासिक अस्तित्व और दैनिक उपयोग की दृष्टि से, जो गोस्वामी-समाज एवं वैष्णव-सृष्टि-दोनों ही के लिये एक उपादेय सामग्री हो।

‘गोस्वामी-परिषद्’ के माध्यम से, इसी विचार से, हमने ‘वंशवृक्ष’ के पुनः प्रकाशन की योजना निर्धारित की है। पूर्व ‘वंशवृक्ष’ का सम्पादन-प्रकाशन ‘परिषद्’ के तत्कालीन मन्त्री नि. ली. गो. श्रीब्रजभूषणलालजी म. कांकरोली (हमारे

उक्त श्रीब्रजपालजी के तृतीय पुत्र श्रीपुषोत्तमजी (१८७९) की परम्परा में मथुरा के छोटे मदनमोहनजी का घर आता है, जिसके वर्तमान अधिपति गो० श्रीब्रजमणजी म. हैं और जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

(iii) षष्ठ 1३ गृह : काशी—यह घर श्रीयदुनाथजी के तृतीय पुत्र श्रीजगन्नाथजी (१९४२) का वंश है, जिसके अधिपति गो. श्रीनिलोकीभूषणजी (मुरलीधरजी) म. थे जिनके माथे श्रीमुकुन्दरायजी गोपाललालजी विराजते हैं।

### सप्तम गृह -

कामवन का यह घर श्रीगुसांईजी के सप्तम पुत्र श्रीधनश्यामजी (१९२८) का वंश है, जिसके अधिपति गो० श्रीरमणलालजी म. थे और अब गो. श्रीधनश्यामलालजी म. हैं जिनके माथे श्रीमदनमोहनजी विराजते हैं।

इस प्रकार हमने अधिकाधिक उपयोगी, सरल और स्पष्ट पद्धति से इन सातों घरों के वंशवृक्षों को तैयार किया है। हमने यावदुपलब्ध साधन-सामग्री से इन्हें यावच्छब्द प्रामाणिक, परिष्कृत और व्यवस्थित बनाने का प्रयत्न किया है। इन वंशवृक्षों के मिलान और संशोधन के लिये हमने सभी घरों को इसकी प्रतिनिधियाँ भेजी थीं, किन्तु वेद है कि पर्याप्त प्रतीक्षा करने पर भी बहुत कम घरों से हमें संशोधन, परिवर्तन वा परिवर्द्धन प्राप्त हुए हैं। जिन घरों ने हमें इस सम्बन्ध में समुचित निर्देश वा प्रकाशन के लिये प्रोत्साहन और प्रेरणा सहित सहमति दी है, हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। जिन महानुभावों ने हमें पत्र का उत्तर देने का भी श्रम नहीं लिया और ऐसी उदासीनता से इस महत्वपूर्ण कार्य का मूल्याङ्कन किया है, उनके प्रति भी हम धन्यवाद ही प्रकट करते हैं। प्रस्तुत संस्करण बहुत थोड़ी संख्या में मुद्रित कराया है—इसी दृष्टि से कि एक बार जिस किसी भी रूप में वस्तु सामने आ

(घरों के तिलकायत वा निवास, स्वामित्व में) उसका निदर्शन पारिशोधन प्रस्तुत संस्करण में दिया गया है, ताकि अद्यतन

जाय, फिर क्रमशः उसमें संशोधन-परिमार्जन तो होता रहेगा। अग्रिम संशोधित संस्करण आठे पेपर पर सचित्र और सज्जक के साथ निकालने का विचार है, जो श्रीद्वारकाधीश अपने कृपावल से यथासमय पूर्ण करेंगे।

प्रस्तुत प्रकाशन में हम निम्नलिखित प्रमुख संस्था वा व्यक्तियों का भी स्मरण दिलाते हैं, जिनकी सग्रहीत, पूर्वलिखित वा प्रकाशित साहित्य-सामग्री का हमने अपने कार्य में समुचित सहयोग वा उपयोग लिया है।

१. वल्लभीय वंशकल्पवृक्ष : राजाराम गंगादास गुजर राजनगर (१७७९) कृत.

[सरस्वती भण्डार विद्याविभाग कांकरोली : वन्य हिन्दी ९०।७]

२. आचार्य वंशावली : केशवकिशोर (१९८०) कृत

३. वंशकल्पवृक्ष : (संस्कृत) निर्भयराम कृत

४. श्रीमद्वल्लभाचार्यनी वंश नी वंशावली : पेटलादी रणछोड़ास ब्रजजीवनदास कृत

५. श्रीवल्लभवंशावली : जगदानन्द कृत

आशा है, हमारे गोस्वामिवन्धुओं एवं वैष्णवों को यह संग्रह उपादेय, रुचिकर और ऐतिहासिक-निर्माण में सम्यक् सहायक सिद्ध होगा। हम यहां अग्रिम प्रकाशन की सफलता के लिये श्रीप्रभु से आन्तरिक कामना करते हुए अपना वक्तव्य समाप्त करते हैं। शम्.

भवदीय—

श्रीकृष्णजयन्ती, २००४  
कांकरोली

गो. श्रीब्रजभूषण शर्मा  
मन्त्री :  
श्रीमद्वल्लभवंशज गो.परिषद

पितृवरण) ने वडैश्रम और मनोयोग से, ऐतिहासिक सुसंगति के साथ किया था, नवसंस्करण का प्रकाशन उन्हीं के सुचिन्तित ‘दृष्टिविन्दु’ के अनुरूप उसी शैली में किया जा रहा है।

प्रथम संस्करण की भूमिका.....‘हमारा दृष्टिविन्दु’ को अधिकल सन्निविष्ट किया गया है.....जहां जो परिवर्तन हुआ है, उसे वहीं परिशोधित, निर्दिष्ट कर दिया गया है। अद्यतन ऐतिहासिक सुसंगति बनी रहे, इस दृष्टि से। आशा है : इस प्रकार पूर्व भूमिका परिपूर्ण रूप लेकर, प्रस्तुत योजना को परिपूर्ण निष्पन्न कर रही है यह सभी के लिये सामान्यतः सुकर एवं व्यवहार्य होगी, ऐसी हमारी निष्ठा और विश्वास है।

आप सब के अपेक्षित सहयोग एवं आर्थिक अंशदान हेतु

साम्भार, सधन्यवाद.....

भवदीय—

गो० ब्रजेशकुमार

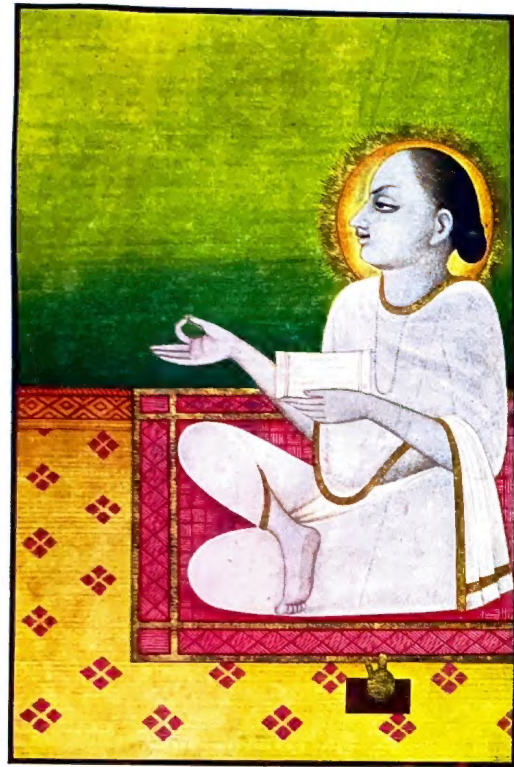
[ संशोधित संस्करण संयोजक ]

मन्त्री—

‘श्रीमद्वल्लभवंशज, गोस्वामिपरिषद्’

(श्रीविठ्ठलजयन्ती, २०४१ वि. कांकरोली )



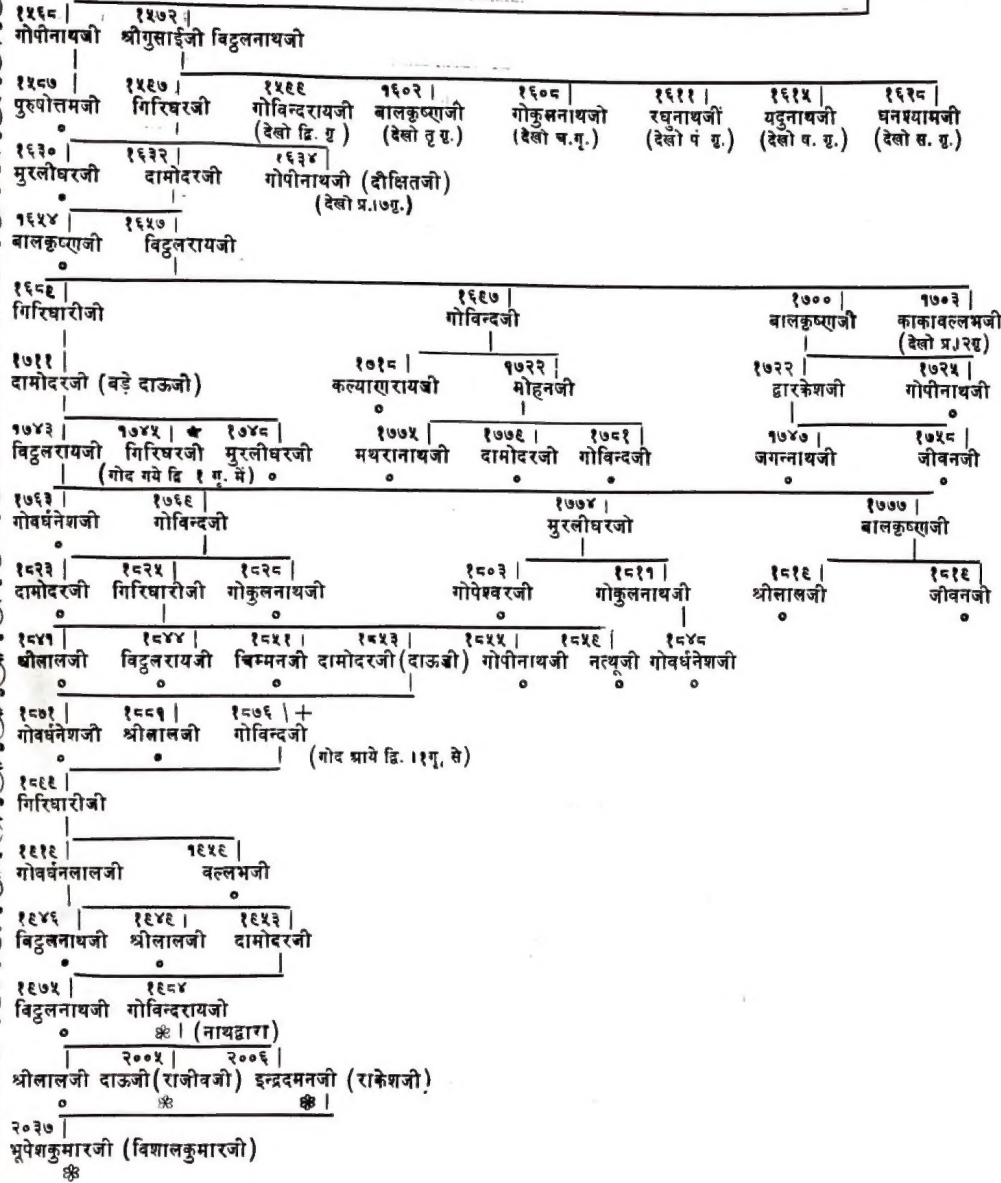


महाप्रभु बगद्गुरु श्री मद्रल्लाभाचार्यजी  
 प्राकट्य सं. १५३५ वि. ) □ ( तिरोधान सं. १५८७ वि.



प्रभुचरण गोस्वामी श्री बिट्ठलनाथजी  
 प्राकट्य पोष कृष्णा ६ सं. १५७२ वि. □ तिरोधान सं. १६४२ वि.


प्रथम-१ गृह : नाथद्वारा (तिलकायत)



विशेष—

★ श्रीहरिरायजी (१९४७) के यहाँ द्वि./१ गृह में गोद गये  
+ श्रीकृष्णरायजी (१८५७) के पुत्र द्वि./१ गृह से गोद गये







बालकृष्णजी विठ्ठलरायजी

विठ्ठलेशजी      दानीरायजी      गोकुलचन्द्रजी

विठ्ठलेशजी मथुरानाथजी मुरलीधरजी

श्रीलालजी

---

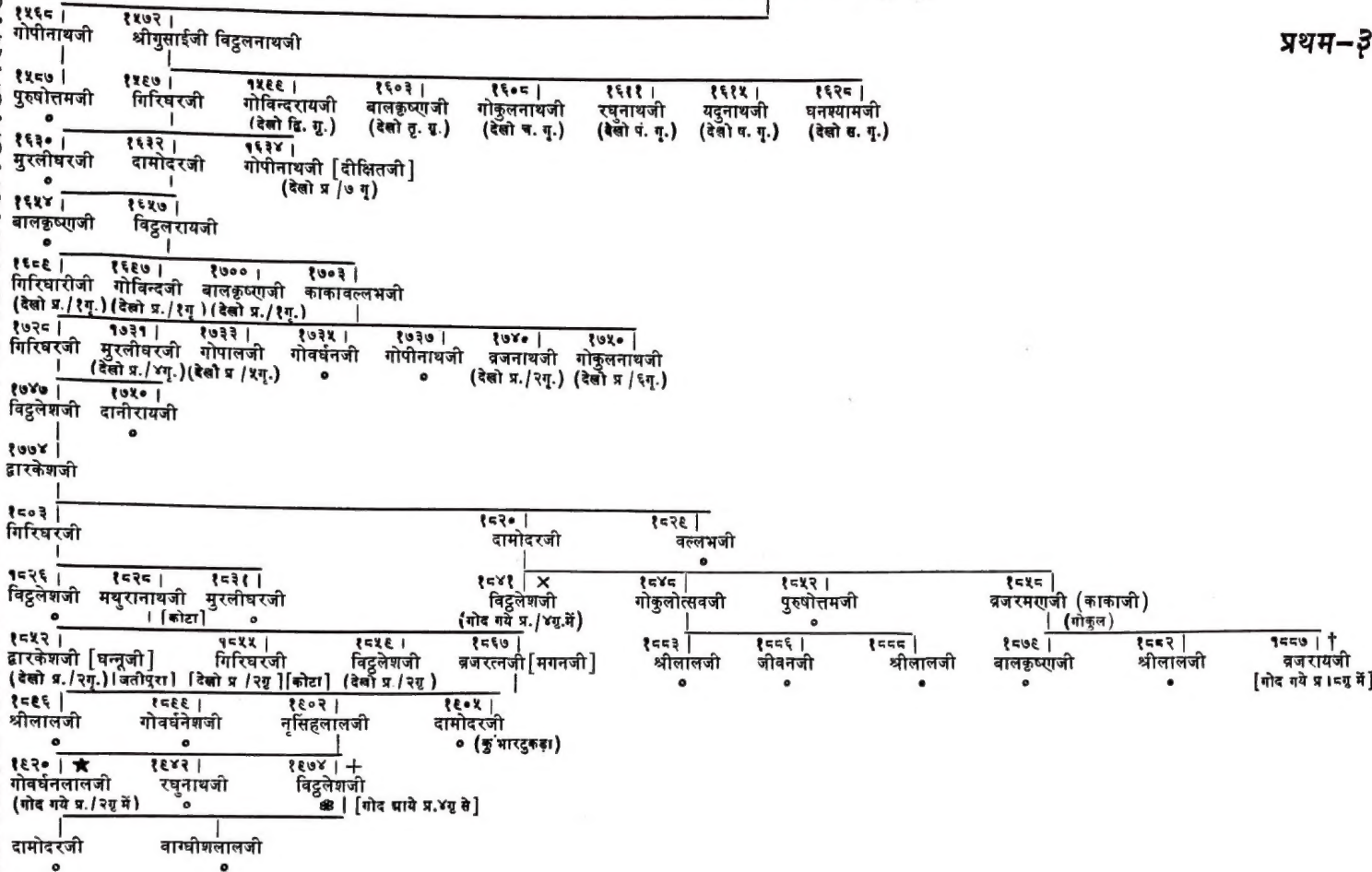
- विशेष—



# श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

[३]

प्रथम-३ गृह : बम्बई (श्रीलालजी)



विशेष—

- ★ श्रीगोकुलाधीशजी (१८७९) के यहां, प्र. ०/२ गृह में गोद गये
- + श्रीबागधीशजी (१९४१) के पुत्र, प्र./४ गृह से गोद घाये
- × श्रीवल्लभजी (१७८८) के यहां, प्र./४ गृह में गोद गये
- † श्रीब्रजभूषणजी (छोटाजी) (१८३८) के यहां प्र./८ गृह में गोद गये।



ब्रजजीवनजी  
द्वारकेशलालजी  
पुरुषोत्तमजी



: गोकुल (कटरा वाला मन्दिर)



- ★ श्रीहारकेजी (बसंतरायजी) (१८७५) के यहां, छ.१९ गृह में गोद गये.
- × श्रीधनस्वामीजी (१९२८) के यहां, डि.१९ गृह में गोद गये.
- + श्रीगोपिकाबल्लभजी (मयनजी) (१९५२) के पुत्र, प्र.०२ गृह से गोद प्राये ।



बम्बई (बड़ा मन्दिर)

१२०१	१२०२				
गोपीनाथजी	श्रीगुलार्जी विठ्ठलनाथजी				
१२०३	१२०४	१२०५	१२०६	१२०७	१२०८
मुकुलनाथजी	गिरिहरजी	गोविन्दरायजी (बैको द्वि. पु.)	नालकृष्णजी (बैको द्वि. पु.)	गोकुलनाथजी (बैको व. पु.)	रघुनाथजी (बैको व. पु.)
१२०९	१२१०	१२११	१२१२	१२१३	१२१४
मुकुलेश्वरजी	दामोदरजी	गोपीनाथजी (दीक्षितजी) बैको प्र. १० पु.			
१२१५	१२१६				
नालकृष्णजी	निसहारायजी				
१२१७	१२१८	१२१९	१२२०	१२२१	१२२२
गिरिहारीजी	गोविन्दजी	नालकृष्णजी	काकाबल्लभजी		
(बैको प्र. १ पु.)	(बैको प्र. १ पु.)	(बैको प्र. १ पु.)			
१२२३	१२२४	१२२५	१२२६	१२२७	१२२८
गिरिहरजी	मुकुलेश्वरजी	गोपालजी	गोबर्धनजी	गोपीनाथजी	गोकुलनाथजी
(बैको प्र. १ पु.)	(बैको प्र. ५ पु.)	(बैको प्र. १ पु.)	०	०	(बैको प्र. २ पु.)
१२२९	१२३०				
सवुराणाथजी	विठ्ठलरायजी जीवनजी (गोपीनाथजी)				
१२३१	१२३२	१२३३	१२३४	१२३५	१२३६
गिरिहरजी	मुकुलेश्वरजी	ब्रजनाथजी	गोकुलनाथजी	गोवर्धनजी	नालकृष्णजी गिरिहरजी (गोकुलेश्वरजी)
१२३७	१२३८	१२३९	१२४०	१२४१	१२४२
गीताम्बरजी	मदनमोहनजी (० पु. जी.)	विठ्ठलजी	श्रीबालजी	जीवनजी	जीवनजी + (गोद माये)
१२४३	१२४४	१२४५	१२४६	१२४७	१२४८
गिरिहरजी	बल्लभजी	गोकुलनाथजी (गोविन्दजी)			

[illegible]

**विशेष—**

- \* श्रीतिरिधरजी (१८३१) के पुत्र, मोद प्राये ।
- × श्रीदामोदरजी (१८१२) के पुत्र प्र. १८ वृह से मोद प्राये ।
- ✱ श्रीश्रीरामजी (१८९७) के वहाँ, प्र. १७ वृह से मोद प्राये ।
- + श्रीगोवर्धनेशजी (१८२३) के वहाँ मोद प्राये ।



**विशेषः—**

\* श्रीविठ्ठलरायजी [१८१७] के पुत्र, मोद धार्ये ।  
 + श्रीवत्सलजी [१८४१] के पुत्र मोद धार्ये  
 \* श्रीगोकुलनाथजी [१८४५] के पुत्र प्र०/६ गृह में मोद धार्ये ।  
 † श्रीवत्सलजी [१८१५] के पुत्र, प्र०/४ में मोद धार्ये ।  
 X श्रीशिवराजजी [१७८७] के बहौ मोद गये ।  
 ● श्रीबासकृष्णजी [१७२५] के बहौ प्र०/८ गृह में मोद गये  
 ÷ श्रीप्रभुजी [१८४३] के बहौ मोद गये ।

प्रथम-८ गृह : अहमदाबाद

१३६८   गोपीनाथजी	१३७२   श्रीगुसाईजी विठ्ठलनाथजी						
१३६७   पुरुषोत्तमजी	१३६७   गिरिधरजी	१३६६   गोविन्दरायजी (देखो द्वि. पु.)	१६०३   बालकृष्णजी (देखो पु. पु.)	१६०८   गोकुलनाथजी (देखो च. पु.)	१६११   रघुनाथजी (देखो प. पु.)	१६१३   यदुनाथजी (देखो प. पु.)	१६२८   धनश्यामजी (देखो स. पु.)
१६३०   मुरलीधरजी	१६३२   दामोदरजी (देखो प्र. १/गु.)	१६३४   गोपीनाथजी [दीक्षितजी]					
१६६०   वल्लभजी (प्रभुजी)	१६६२   मधुरामल्लजी	१६७३   गोविंदजी (देखो प्र./७गु.)	१६७५   रामकृष्णजी (देखो प्र./११गु.)				
१६८०   रघुनाथजी	१६८२   गिरिधरजी [गोवर्धनेशजी]	१६८३   गोपालजी	१६८८   पुरुषोत्तमजी (नटवरगोपालजी)				

१७२५ | बालकृष्णजी

१७५८ | ★

ब्रजरायजी (गोद धाये प्र./७गु. से)

१८०० | रघुनाथजी

१८३१   गोपीनाथजी	१८३४   श्रीलालजी	१८३८   ब्रजभूषणजी (छोटाजी)	१८४६   पीताम्बरजी
------------------	------------------	-------------------------------	-------------------

१८५५   ब्रजनाथजी	१८५७   गोपालजी	१८५६   उपेन्द्रजी	१८५६   ब्रजनाथजी	१८८७   ब्रजरायजी
------------------	----------------	-------------------	------------------	------------------

(गोद धाये प्र./३ पु. से)

१८९१   बालकृष्णजी	१८९३   रघुनाथजी	१८९५   पद्मालालजी	१८९६   मधुसूदनजी
-------------------	-----------------	-------------------	------------------

(गोद धाये प्र./३ पु. से)

१८९०   गोपीनाथजी	१८९०   रामचन्द्रजी	१८९६   रणछोडलालजी (अहमदाबाद)	१८७३   गोपीनाथजी
------------------	--------------------	---------------------------------	------------------

१८७७   छोटाजी	१८८७   ब्रजरायजी (नटवरगोपालजी)	ब्रजेन्द्रकुमारजी	मधुसूदनलालजी
---------------	-----------------------------------	-------------------	--------------

विशेष:—

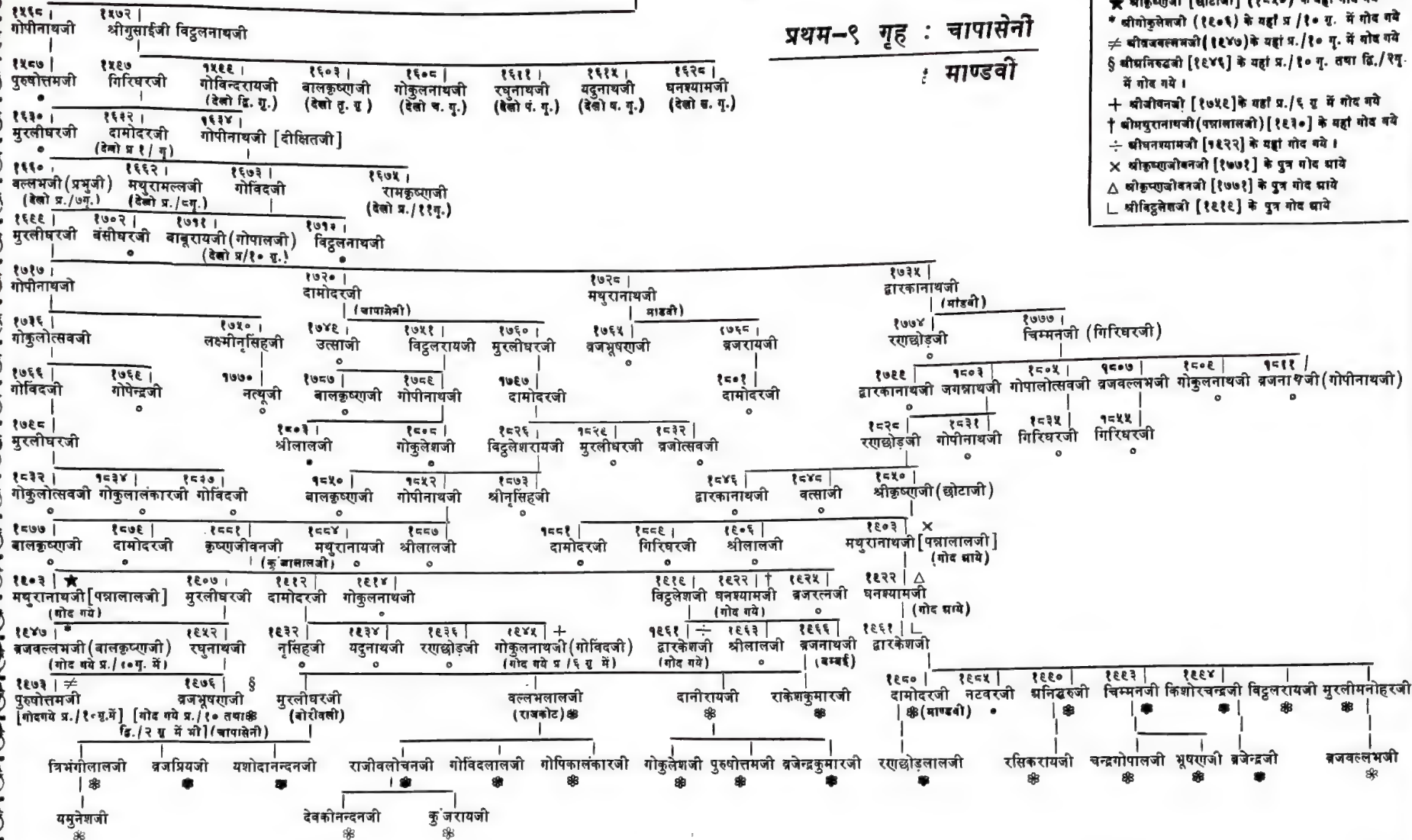
- ★ श्रीरघुनाथजी १७२७ के पुत्र, प्र०/७ गृह से गोद धाये
- + श्रीब्रजरायजी-काकाजी (१८५८) के पुत्र प्र०/३ गृह से गोद धाये।
- × श्रीब्रजनाथजी (१८०३) के पुत्र प्र०/२ गृह से गोद धाये



प्रथम-९ गृह : चापासेनी  
: माण्डवी

विशेष—

- ★ श्रीकृष्णजी [छोटाजी] (१८५०) के यहाँ गोद गये
- \* श्रीगोकुलेशजी (१८०९) के यहाँ प्र./१० गृ. में गोद गये
- ≠ श्रीब्रजवल्लभजी (१८५७) के यहाँ प्र./१० गृ. में गोद गये
- § श्रीप्रतिपदजी (१८५९) के यहाँ प्र./१० गृ. तथा डि./१० गृ. में गोद गये।
- + श्रीजीवनजी [१७५६] के यहाँ प्र./६ गृ. में गोद गये
- † श्रीमधुरानाथजी (पन्नालालजी) [१८३०] के यहाँ गोद गये
- श्रीचनश्यामजी [१८२२] के यहाँ गोद गये।
- × श्रीकृष्णजीवनजी [१७७१] के पुत्र गोद धार्ये
- △ श्रीकृष्णजीवनजी [१७७१] के पुत्र गोद धार्ये
- ⊥ श्रीविठ्ठलेशजी [१८१६] के पुत्र गोद धार्ये



# श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

[१०]

प्रथम/१० गृह : जामनगर

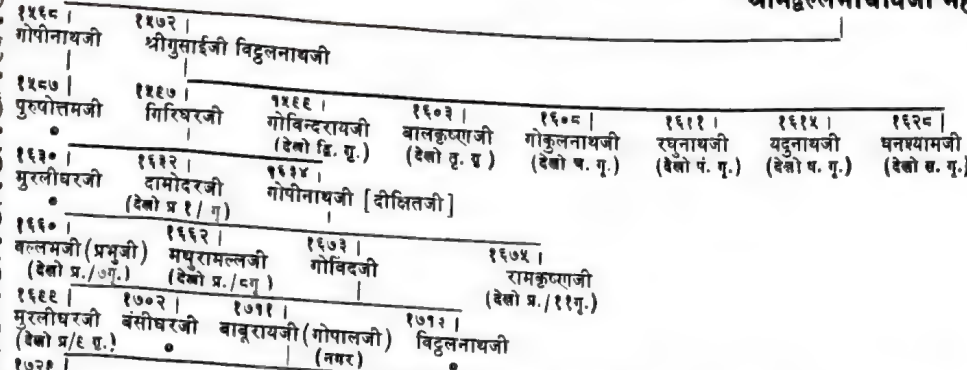
: जूनागढ़

: पोरबंदर (द्वारकानाथजी की हवेली)

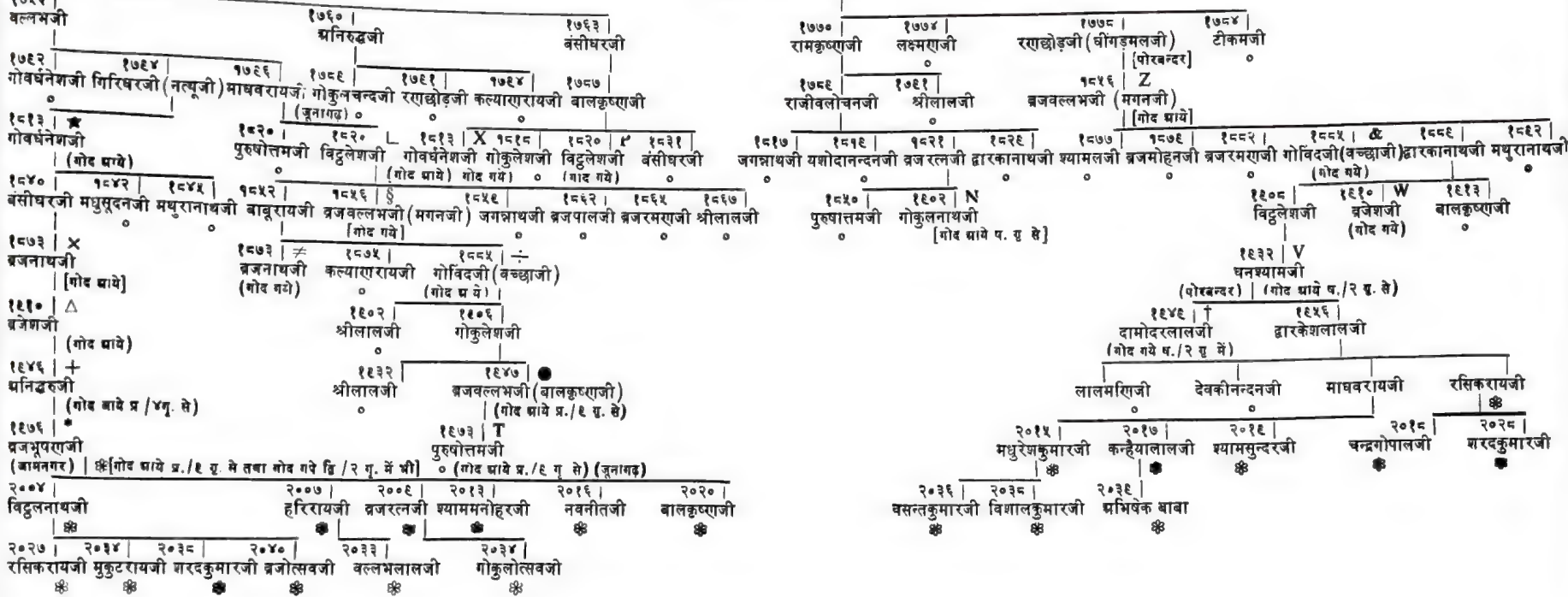
विशेष—

- ★ श्रीबालकृष्णजी (१७८७) के पुत्र गोद धाये
- × श्रीबाबूरायजी (१८५२) के पुत्र गोद धाये
- △ श्रीद्वारकानाथजी (१८८६) के पुत्र गोद धाये
- + श्रीमुरलीधरजी (१८१३) के पुत्र प्र./४ गृ. से गोद धाये
- \* श्रीरघुनाथजी (१८५२) के पुत्र प्र./६ गृ. से गोद धाये तथा श्रीअनिरुद्धजी (१८५६) के यहां द्व./२ गृ. में गोद भी गये
- श्रीबालकृष्णजी (१७८७) के पुत्र गोद धाये
- § श्रीरणछोड़जी (१७८८) के यहां गोद गये।
- ≠ श्रीवंशीधरजी (१८४०) के यहां गोद गये
- ÷ श्रीव्रजवल्लभजी (मगनजी) के पुत्र गोद धाये

- श्रीमुरलीधरजी (१८०७) के पुत्र प्र./६ गृ. से गोद धाये
- T श्रीरघुनाथजी (१८५२) के पुत्र प्र./६ गृ. से गोद धाये
- X श्रीगिरिधरजी (नरपूजी) (१७८५) के यहां गोद धाये
- P श्रीमाधवरायजी (१७८६) के यहां गोद गये
- N श्रीवल्लभजी (१८६१) के पुत्र व. गृ. से गोद धाये
- Z श्रीविठ्ठलजी (१८२०) के पुत्र गोद धाये
- & श्रीबाबूरायजी (१८५२) के यहां गोद गये
- W श्रीव्रजनाथजी (१८७३) के यहां गोद गये
- V श्रीरमणलालजी (१८०५) के पुत्र व./२ गृ. से गोद धाये
- † श्रीव्रजनाथजी (१८२३) के यहां व./२ गृ. में गोद गये



हनुजी (गोकुलाधीशजी)





१३६८   गोपीनाथजी	१३७२   श्रीगुसाईजी विठ्ठलनाथजी						
१३७७   पुरुषोत्तमजी	१३८७   गिरिधरजी	१३८८   गोविन्दरायजी (देखो दि. गु.)	१६०६   बालकृष्णजी (देखो वृ. पृ.)	१६०८   गोकुलनाथजी (देखो व. गु.)	१६११   रघुनाथजी (देखो पं. गु.)	१६१५   यदुनाथजी (देखो व. गु.)	१६२८   धनश्यामजी (देखो स. गु.)
१६३०   मुरलीधरजी	१६३२   दामोदरजी (देखो प्र १ / गु.)	१६३४   गोपीनाथजी [दीक्षितजी]					

१६६०। वल्लभजी (प्रभुजी) (देसो प्र./७ग.)	१६६२। मयूरामल्लजी (देसो प्र./८ग.)	१६७३। गोविंदजी (देसो प्र./१ग.)	१६७५। रामकृष्णजी
---	---	--------------------------------------	---------------------

१७०४ राजीवलोचनजी १७०८ जगन्नाथजी १७१५ रंगनाथजी १७२० घनश्यामजी  
१७४२ द्वारकेशजी १७२६ गिरिधारीजी १७३२ कृष्णचन्द्रजी १७४७ ब्रजभरणीजी १७४६ माधवरायजी १७३५ यदुनाथजी १७३७ ब्रजरत्नजी १७४१ श्रीकृष्णजी  
१७८४ जगन्नाथजी १७८७ रंगनाथजी १७८५ ब्रजपालजी १७८८ गोपालजी १७९१ ब्रजेश्वरजी १७९६ ब्रजालंकारजी १७७२ कल्याणरायजी १७६० ब्रजाधीशजी १७६२ प्रद्युम्नजी चिम्मनजी १७६६ श्रीनृसिंहजी १७७८ जीवन्जी १७७७ गोपेश्वरजी १७७६ अच्युतरायजी  
१८१६ विट्ठलनाथजी १८२६ वच्छाजी रामकृष्णजी माधवरायजी गोकुलालंकारजी मुरलीधरजी नत्थूजी (जगन्नाथजी) रंगनाथजी छोटाजी विट्ठलेशजी ब्रजनाथजी गोकुलेशजी विट्ठलेशजी  
(प्राचार्यजीबारे) (यदुनाथजी) (ब्रजपतिजी)

१८३७ । १८३८ । १८६१ । १८८१ । १८८३ । १८८६ । १८८८ । १८८९ ।  
 ब्रजरायजी राजीवलोचनजी ब्रजाभरणजी श्रीलालजी टीकमजी वल्लभजी श्रीलालजी गोवर्धनेशजी  
 १८८६ । १९०२ । १९०४ । १९०६ ।  
 गोपेश्वरजी गोविंदजी मिश्रिधरजी श्रीलालजी

१६२२।	१६२४।	१६२७।
गोपोत्सवजी	गोपालजी	श्रीलालजी

१९४८ | १९६८ | \*

श्रीलालजी पुरुषोत्तमलालजी

०१ कोटा | (मोद प्राये व./२४. से)

<p>१९८८   गोविन्दलालजी ⌞ (कवी) ⌟</p> <p>२००७   ब्रजेशकुमारजी ⌞ ⌟</p> <p>२०२८   यदुनाथजी ⌞ २०३०   २०३२   जयदेवजी ⌞ ⌟ ⌞ ⌟</p>	<p>२००६   घनश्यामलालजी ⌞ ⌟</p> <p>२०३२   कृष्णकुमारजी ⌞ २०३४   कुजेशजी ⌞ ⌟</p>	<p>२०१३   दामोदरलालजी ⌞ ⌟</p> <p>२०३५   हरिरायजी ⌞ २०३८   दर्शनकुमारजी ⌞ ⌟</p>	<p>२०१६   बलभलालजी ⌞ ⌟</p> <p>२०४०   प्रभयकुमारजी ⌞ ⌟</p>	<p>गोपाललालजी ⌞ (कोटा) ⌟</p> <p>२०२३   विनयकुमारजी ⌞ २०२६   शरदकुमारजी ⌞ ⌟</p>	<p>त्रिविक्रमलालजी ⌞ ⌟</p> <p>त्रिलोकीभूषण (कलकत्ता) ⌞ ⌟</p>
---	--	--	---	--	--

**विशेषः—**

★ श्रीदामोदरजी (१९४६) के पुत्र प./२ पृष्ठ से गोद आये ।

द्वितीय/१ गृह : नाथद्वारा (श्री विठ्ठलनाथजी)

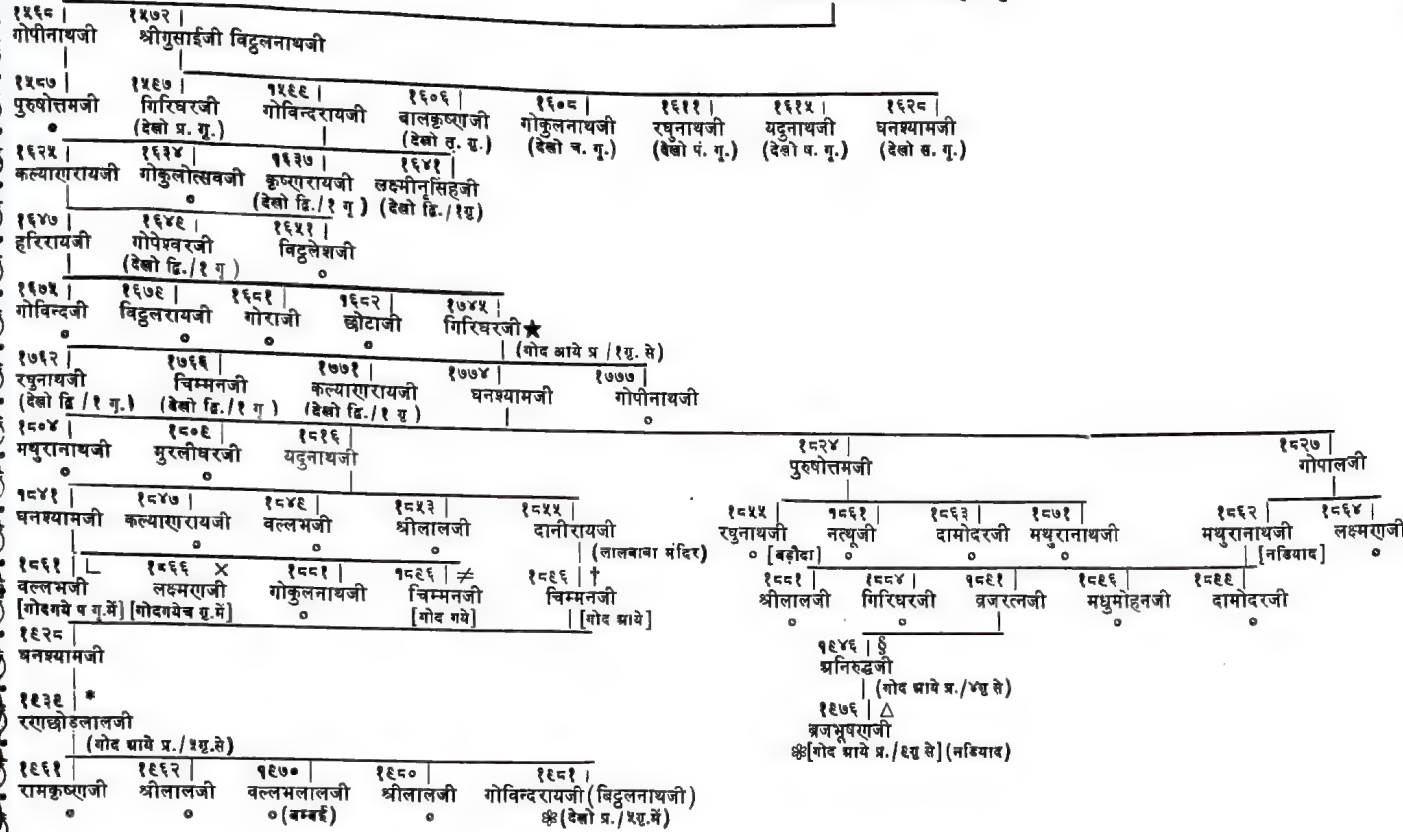
**: इन्दौर**



\* श्रीदामोदरजी [बर्फाऊजी] (१७११) के पुत्र प्र. १९६६ मोह धाये  
 L श्रीगोविन्दराजी [१७३०] के यहाँ वृ २ गृ. में मोह गये ।  
 X श्रीगोकुलसुखजी [१८१६] के पुत्र वृ २ गृ. में मोह धाये  
 ≠ श्रीदामोदरजी [राऊजी] (१८५३) के यहाँ प्र. १९७० में मोह गये  
 † श्रीगोविन्दराजी [१८५६] के यहाँ मोह गये  
 § श्रीकल्याणराजी [१८६६] के यहाँ मोह गये  
 Δ श्रीगोविन्दजी [समकरियावालाजी] (१८७७) [इन्वीर] के पुत्र  
 मोह धाये ।  
 \* श्रीकल्याणराजी [१८५७] (इन्वीर) के पुत्र मोह धाये ।



द्वितीय/२ गृह : बम्बई (लालबाबा)  
: नडियाद



विवेचनः—

- ★ श्रीदामोदरजी [बड़ेदाऊजी] (१७११) के पुत्र प्र./१ गृ. से गोद आये
- └ श्रीदेवकीनन्दनजी (बयपुर) [१७१६] के यहाँ प. गृ. में गोद गये
- × श्रीब्रजपतिजी [१९६३] के यहाँ च. गृ. में गोद गये
- ≠ श्रीदानीरायजी (१८५५) के यहाँ गोद गये।
- † श्रीधनश्यामजी [१८४१] के पुत्र गोद आये
- \* श्रीजीवनजी [१८१६] वीरभद्र के पुत्र प्र./४ गृ. से गोद आये
- ‡ श्रीमुरलीधरजी [वेट] के पुत्र प्र./४ गृ. से गोद आये।
- △ श्रीरघुनाथजी [१८५२] के पुत्र प्र./६ गृ. गोद आये।

तृतीय/१ गृह : कांकरोली [श्रीद्वारकाधीश]

[छोटा मंदिर]



★ श्रीवत्सलजी (१६७१) के पुत्र गोव आये ।

८ श्रीगोकुलनाथजी [१८२१] के पुत्र गोद पाये ।

≠ श्रीहजारकेशजी (धम्मूजी) (जतीपुरा) [१८१२] के पुत्र प्र./२ सु.  
से गोद धार्ये ।

% श्रीकल्याणरायजी [१८६५] के पुत्र, प./२ न. से गोद लाये

\* श्रीगोपालजी [१९१०] के यहां वृ./१ गृ. में तथा श्रीगोपालनाथ जी (१९१७) के यहां भी व./२ गृ. में गोद गये ।

§ श्रीगजभूषणजी [१८३५] के यहाँ गोद गये ।

† श्रीधनश्यामजी [१८८६] के पुत्र प्र./५ वृ. से मोद आये ।

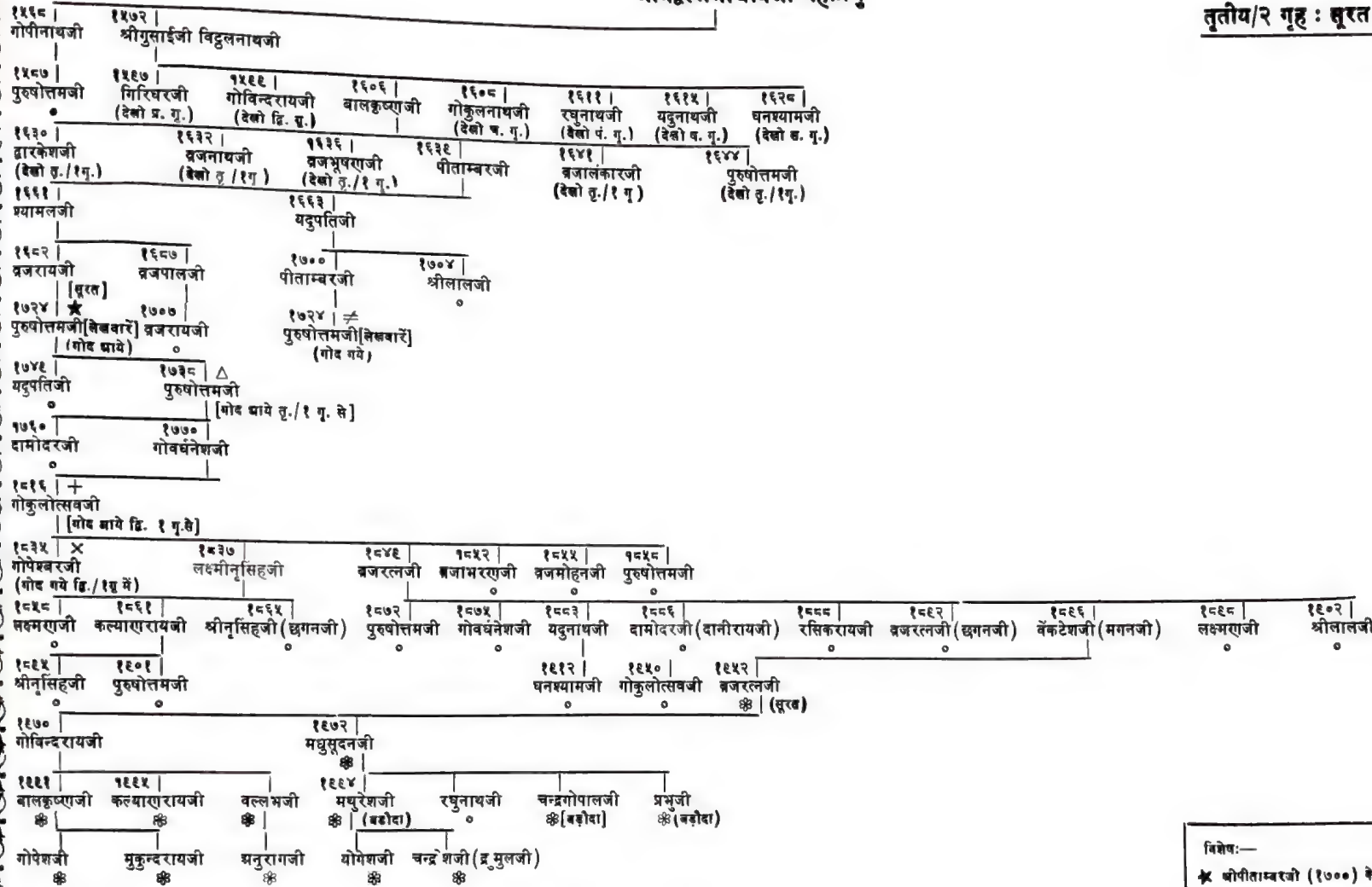
△ श्रीबालकृष्णजी [१६२४] के पुत्र गोद आये ।

× श्रीबजरमहाजी (१७५७) के यहाँ स. पु. में गोद गये ।

+ श्रीगिरिधरजी (१९६२) के यहाँ गये।

— श्रीपुरुषोत्तमजी (लेखबारे) [१७२४] के यहाँ तृ./२ व. में  
गोद गये ।





विशेष:—

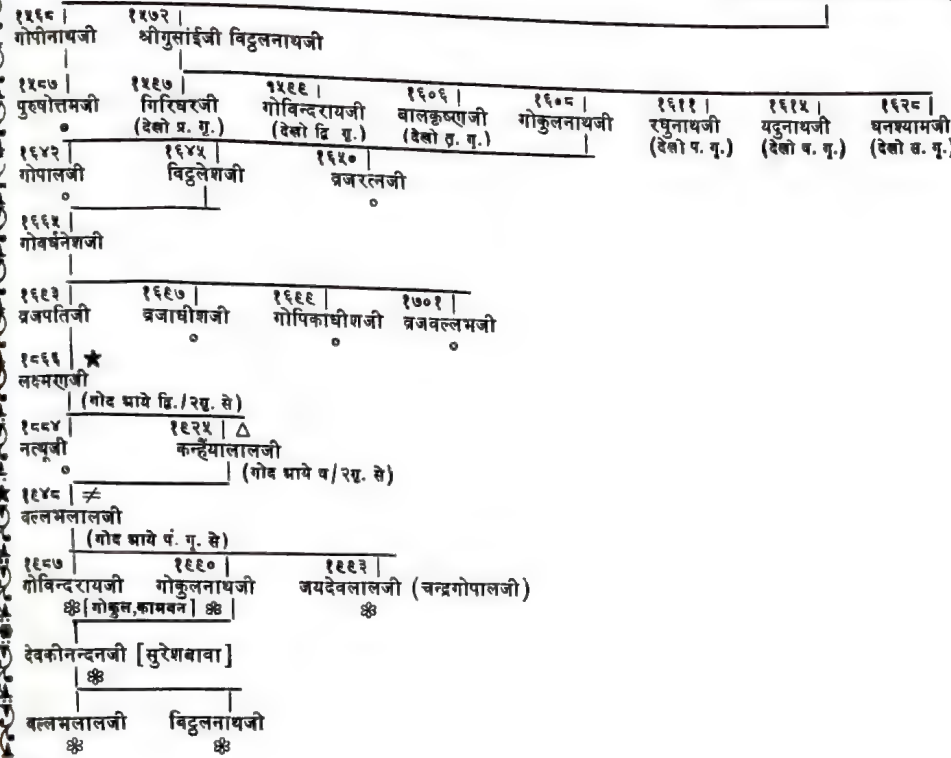
★ श्रीपीताम्बरजी (१७००) के पुत्र गोद धाये ।

△ श्रीगुरुलोकेशजी [१७१८] के पुत्र वृ./१ गु. से गोद धाये ।

✱ श्रीगोविन्दरायजी [१७८५] के पुत्र दि./१ गु. से गोद धाये

✱ श्रीविठ्ठलेशरायजी (१८११) के वहाँ दि./१ गु. में गोद गये ।

≠ श्रीव्रजरायजी [१९८२] [सूरत] के वहाँ गोद गये ।



विशेष—

★ श्रीधनश्यामजी (१८४१) के पुत्र, द्वि./२ गृ. से मोद आये ।  
[श्रीब्रजपतिजी (१८६३) के श्रीमामिनी बहूजी ने अपनी भतीजी श्रीकूलकुंवर बहूजी को गद्दी सोपी, जो सप्तम गृह में श्रीरमणजी (१७०४) के पुत्र श्रीब्रजोत्तमजी (१७२६) के दूसरे बहूजी थे । इनके पुत्र श्रीब्रजरमणजी (१७५७) पं. गृ [जयपुर] में श्रीगिरिधरजी [१७७६] के पुत्र श्रीदेवकीनन्दनजी [१७६६] ❧ साथ रहे और श्रीमदनमोहनजी श्रीगोकुलनाथजी और श्रीचन्द्रमाजी श्री श्रीब्रजरमणजी के सन्तति न होने से श्रीदेवकीनन्दनजी ही तीनों स्वरूपों की सेवा करते थे । इनके तीन बहूजी थे । उनके प्रथम श्रीयमुना बहूजी ने द्वि./२ गृ. से श्रीधनश्यामजी [१८४१] के पुत्र श्रीवल्लभजी [१८६१] को मोद लेकर पंचम गृह में तिलकायत किये, द्वितीय श्रीलक्ष्मी बहूजी ने द्वि./२ गृ. से उन्हीं श्रीधनश्यामजी [१८४१] के द्वितीय पुत्र श्रीलक्ष्मणजी [१८६६] को मोद लेकर चतुर्थ गृह में तिलकायत किये और श्रीरामिणी बहूजी ने पृ/१ गृ. से श्रीगोपालजी [१८२७] के पुत्र श्रीब्रजपालजी [१८६०] को मोद लेकर सप्तम गृह में तिलकायत किये ।]

△ श्रीरमणलालजी (१८०४) के पुत्र, प./२ गृ. से मोद आये ।

≠ श्रीदेवकीनन्दनजी [१८१५] के पुत्र, पं. गृ. से मोद आये ।

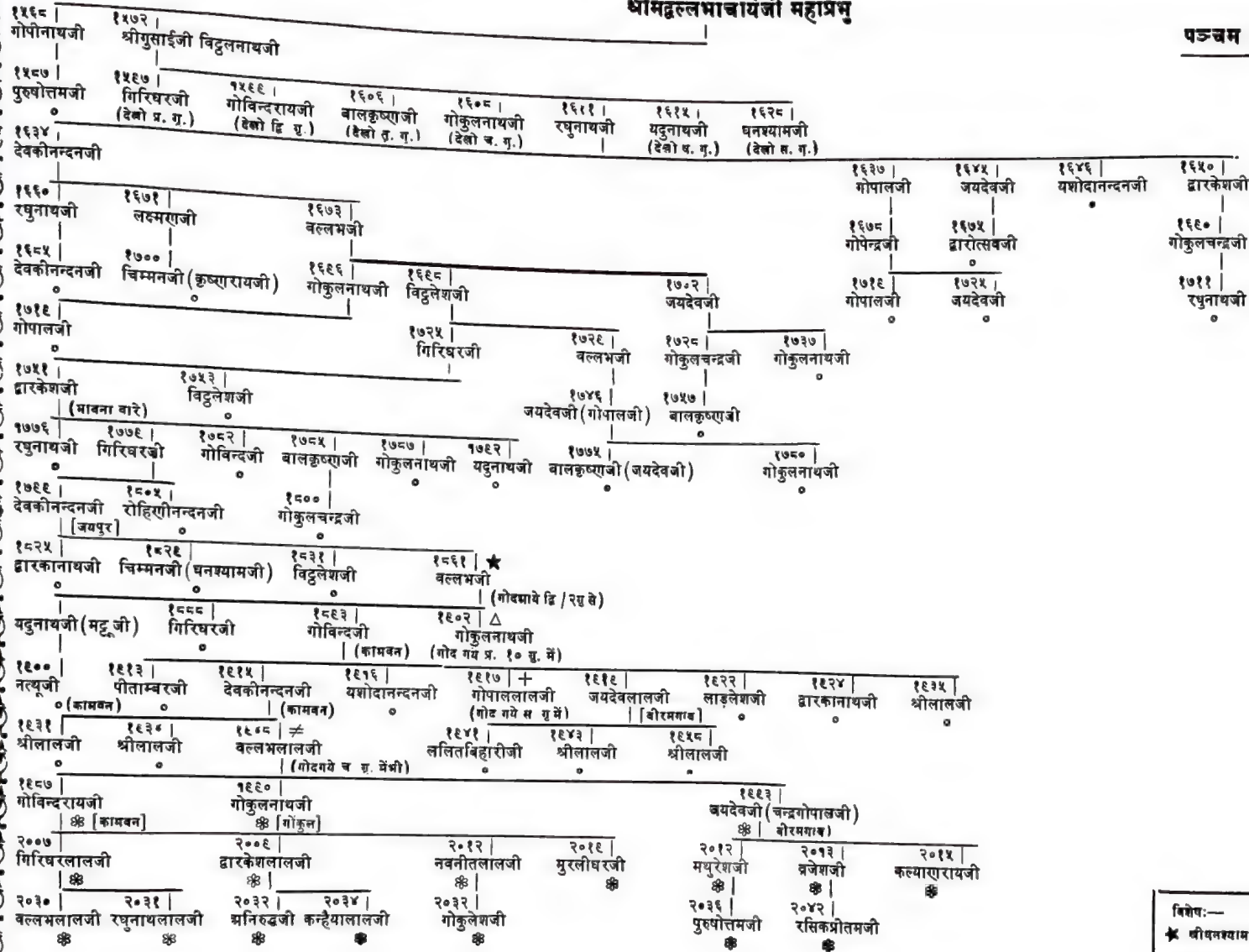


# श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

[१७]

पञ्चम गृह : कामवन

[श्रीचन्द्रमाजी]



विशेष:-

- ★ श्रीघनश्यामजी (१८५१) के पुत्र द्वि/२ गृ. से गोद पाये।
- ≠ श्रीकन्हैयालालजी [१९२५] के यहाँ च. गृ. में भी गोद गये।
- + श्रीब्रजपालजी [१८५६] के यहाँ स. गृ. में गोद गये।
- △ श्रीनवनीलजी [१८२१] के यहाँ प्र./१० गृ. में गोद गये।

# श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभु

[१८]

षष्ठ/१ गृह : शेरगढ़ [बडोदा]

१५६८   गोपीनाथजी	१५७२   श्रीगुसाईजी विठ्ठलनाथजी								
१५८७   पुरुषोत्तमजी	१५९७   गिरिधरजी (देखो प्र. गृ.)	१५९९   गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गृ.)	१६०६   बालकृष्णजी (देखो तृ. गृ.)	१६०८   गोकुलनाथजी (देखो च. गृ.)	१६११   रघुनाथजी (देखो प. गृ.)	१६१५   यदुनाथजी	१६२८   घनश्यामजी (देखो छ. गृ.)		
१६३४   मधुसूदनजी	१६३८   रामचन्द्रजी (देखो व. २ गृ.)	१६४२   जगन्नाथजी (देखो व. ३ गृ.)	१६४४   बालकृष्णजी	१६४७   गोपीनाथजी					
१६६०   प्रद्युम्नजी	१६६४   मुरलीधरजी (जोबला)	१६६४   मथुरानाथजी (मोदगये व. २ गृ. में)	१६६७   विठ्ठलनाथजी (मोदगये व. २ गृ. में)	१६८०   चम्पनजी (मोदगये व. ३ गृ. में)	१६६६   गोपालमणिजी				
१७१७   विठ्ठलनाथजी	१७१८   द्वारकानाथजी								
१७६२   प्रद्युम्नजी									
१७८३   यदुनाथजी	१७८५   विठ्ठलनाथजी (मोदगये व. २ गृ. में)	१७८३   मुरलीधरजी		१८००   दामोदरजी (मरुच)	१८०२   गोपालजी	१७७४   मधुसूदनजी	१८००   द्वारकानाथजी		
१८१७   गोकुलनाथजी	१८२५   बालकृष्णजी	१८३४   विठ्ठलनाथजी	१८३४   गोवर्धनजी	१८३६   मधुसूदनजी	१८३६   गोविन्दजी	१८२८   यदुनाथजी	१८३६   यदुपतिजी	१८४०   वल्लभजी	
१८३६   प्रद्युम्नजी	१८३६   यदुनाथजी								
१८६६   यदुनाथजी									
१८६६   गोकुलनाथजी	१८६८   श्रीलालजी	१८००   वल्लभजी							
१८२३   गिरिधरजी	★ (मोद घाये व. १ गृ. से)								
१८४४   श्रीलालजी	१८६१   वल्लभलालजी (बडोदा)								

विशेषः—

- ★ श्रीवज्रनाथजी (१८०३) के पुत्र व. १ गृ. से मोद घाये ।
- + श्रीगोकुलमणिजी [१७०५] के यहाँ व. २ गृ. में मोद गये ।
- × श्रीरामचन्द्रजी [१६३८] (मथुरा) के यहाँ व. २ गृ. में मोद गये
- △ श्रीजगन्नाथजी [१६४२] (काशी) के यहाँ व. ३ गृ. में मोद गये ।



# धीमदलभाचार्यजी महाप्रभु

[१६]

वठ/२ गृह : मथुरा (मदनमोहनजी दाऊजी)  
: ,, (छोटे मदनमोहनजी दाऊजी)

१५६८ गोपीनाथजी	१५७२ श्रीगुसाईजी विठ्ठलनाथजी						
१५८७ पुरुषोत्तमजी	१५९७ गिरिधरजी (देखो प्र. गु.)	१५९९ गोविन्दरायजी (देखो द्वि. गु.)	१६०६ बालकृष्णजी (देखो तृ. गु.)	१६०८ गोकुलनाथजी (देखो च. गु.)	१६११ रघुनाथजी (देखो प. गु.)	१६१५ यदुनाथजी	१६२८ धनश्यामजी (देखो स. गु.)
१६३४ मधुसूदनजी (देखो व./१गु.)	१६३८ रामचन्द्रजी (मथुरा) (देखो व./३गु.)	१६४२ जगन्नाथजी (देखो व./३गु.)	१६४४ बालकृष्णजी	१६४७ गोपीनाथजी (देखो व./१गु.)			

१६६७ विठ्ठलनाथजी  
(गोद धाये व./१ गु. से)

१७०५ गोकुलमणिजी

१७८५ + विठ्ठलनाथजी

(गोद धाये व./१ गु. से)

१८०५ पुरुषोत्तमजी (स्थायवारे)	१८०७ कल्याणरायजी	१८०८ गोपीनाथजी	१८१० गोपालजी (गोद गये व./३गु. में)	१८२१ गिरिधरजी
-------------------------------	------------------	----------------	------------------------------------	---------------

१८३७ कल्याणरायजी	१८३९ ब्रजपालजी	१८४५ गोकुलनाथजी	१८४७ मथुरानाथजी
------------------	----------------	-----------------	-----------------

१८७१ मथुरानाथजी विठ्ठलनाथजी

१८६५ कल्याणरायजी [जोड़ना]	१८६५ गोविन्दजी	१८६७ मुरलीधरजी [जोड़ना]	१८६७ श्रीलालजी	१८६९ गोवर्धनजी	१८०१ गोविन्दजी	१८०३ ब्रजनाथजी [जोड़ना]	१८०३ गोकुलनाथजी	१८०८ श्रीलालजी
१८१७ गोपाललालजी	१८२० गोविन्दजी	१८२२ जीवनलालजी [गोद गये व./३ गु. में]	१८२४ बालकृष्णजी [गोद गये तृ./१ गु. में]		१८२० वेंकटेशजी	१८२३ गिरिधरलालजी (गोद गये व./१ गु. में)	१८२५ मधुसूदनजी (गोद गये प्र./८ गु. में)	१८२७ श्रीलालजी

१८७० विठ्ठलनाथजी

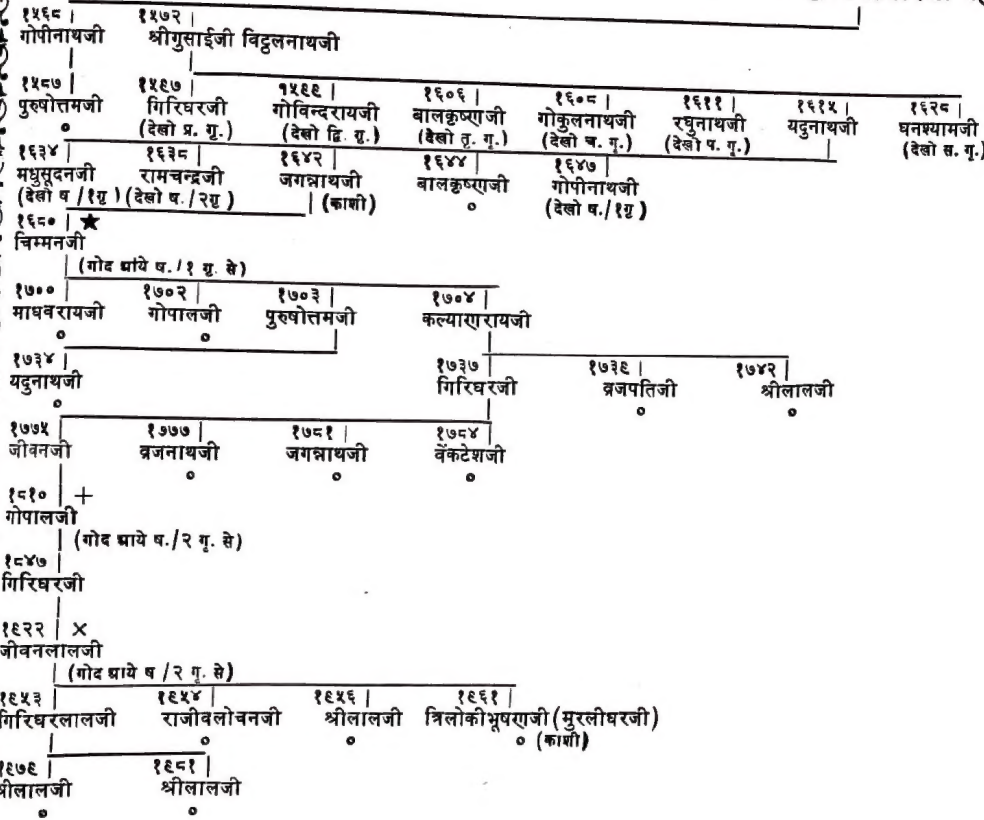
(गोद धाये व./१ गु. से) (मथुरा)

प्रद्युम्नजी	यदुनाथजी	वेंकटेशजी	कृष्णकुमारजी	अक्षयकुमारजी	राजेन्द्रकुमारजी
०	❀   मथुरा	०	❀   कांकरोली	❀   (काशी)	❀   [बड़ोवा]
२०२७	२०१५				
शरदकुमारजी	प्रबोधकुमारजी		प्रणयकुमारजी	परितोषकुमारजी	पंकजकुमारजी
❀	❀		❀	❀	❀
गोपाललालजी	ब्रजभूपाललालजी				
❀	❀				

विशेष:-

- \* श्रीमधुसूदनजी (१६३४) [शिरगढ़] के पुत्र व./१ गु. से गोद धाये ।
- + श्रीप्रद्युम्नजी (१७६२) के पुत्र व./१ गु. से गोद धाये ।
- × श्रीजीवनजी (१७७५) के यहां व./३ गु. में गोद गये ।
- श्रीबालकृष्णजी (१८२४) के पुत्र व./१ गु. से गोद धाये ।
- △ श्रीगिरिधरजी (१८४७) के यहां व./३ गु. में गोद गये ।
- § श्रीगिरिधरजी (१८६६) के यहां तृ./१ गु. में गोद गये ।
- † श्रीवत्सलजी (१८००) के यहां व./१ गु. में गोद गये ।
- \* श्रीब्रजरायजी (१८६७) के यहां प्र./८ गु. में गोद गये ।
- % श्रीधनश्यामलालजी (१८३२) के पुत्र प्र./१० गु. से गोद धाये ।
- ÷ श्रीगोपालजी (१८२४) के यहां प्र./११ गु. में गोद गये ।
- & श्रीलक्ष्मणजी (१८६६) के यहां च. गु. में गोद गये ।
- ≠ श्रीविठ्ठलेशजी (१८०८) के यहां प्र./१० गु. में गोद गये ।
- श्रीकल्याणरायजी (१८०७) के यहां गये ।

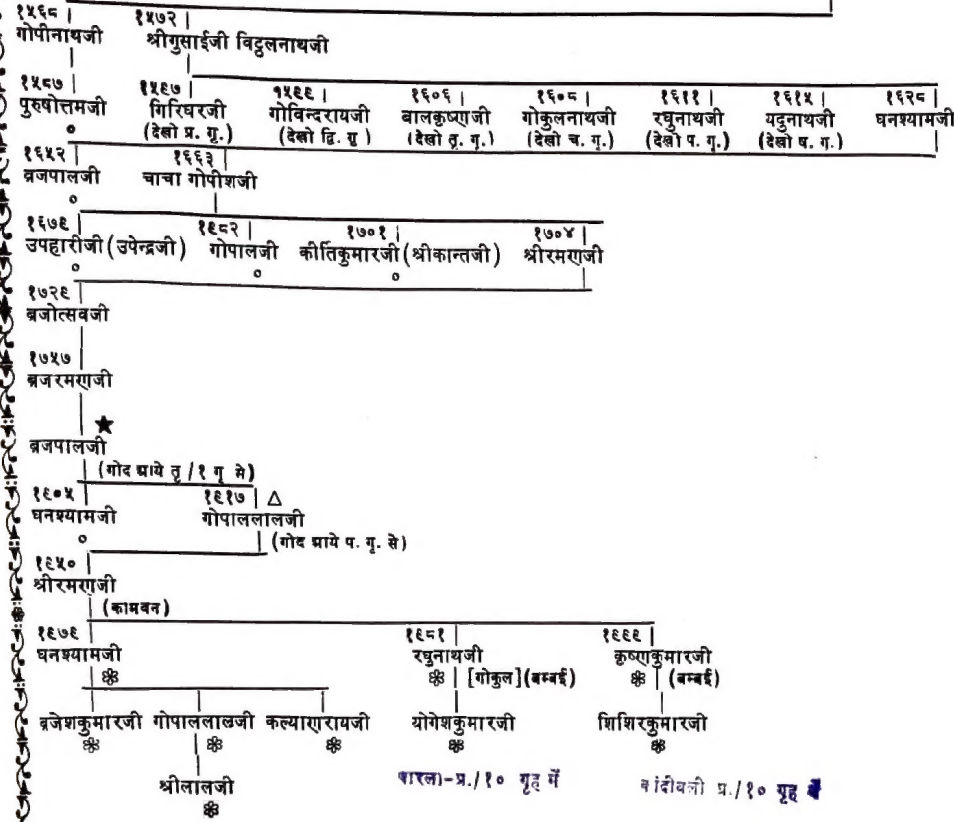
१८७९ पुरुषोत्तमजी							
१८०२ श्रीलालजी	१८०४ रमणलालजी						
१८२३ ब्रजपालजी	१८२५ कन्हैयालालजी (गोद गये च. गु. में)	१८२८ श्रीलालजी	१८३२ धनश्यामलालजी (गोद गये प्र./१० गु. में)				
१८४९ दामोदरलालजी	% (गोद धाये प्र./१० गु. से)						
१८४९ पुरुषोत्तमलालजी (गोद गये प्र./११ गु. में)	२०३८ ब्रजभूपाललालजी [मथुरा]						
	प्राणवल्लभजी	रसिकवल्लभजी					
	ब्रजवल्लभजी (देवकुमारजी)						



विशेष:—

- ★ श्रीमधुसूदनजी (१९३४) के पुत्र व. १ गृ. से गोद धाये ।
- + श्रीविठ्ठलनाथजी [१७९५] के पुत्र व. २ गृ. से गोद धाये ।
- X श्रीकल्याणरायजी [१८६५] के पुत्र व. २ गृ. से गोद धाये ।





विशेष:—

★ श्रीगोपालजी (१८२७) के पुत्र तु/१ गु. से मोद घाये ।

Δ श्रीगोविन्दजी [१८६३] के पुत्र प. गु. से मोद घाये ।